दीपावली विशेषांक

Photo by 'Ramana'

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

सब कुछ है खाली यहाँ !

प्रेषक :
चन्द्रमोहन नेवर - कलकत्ता

एम. आर. एम. प्रोडक्शन्स, मद्रास
भक्ति
महिमा
स्टुडिओ : ए. वि. एम
संवाद
पुराणिक
सुशील कुमार
दिग्दर्शन
के. शंकर
संगीत
डि. दिलीप
गीत
दीपक

नवम्बर १९६०

१९२०
-१९६०

४

वर्ष...

और स्वाद क्षेत्र में प्रगति की ओर बढ़ते चरण

हमें वह दिन याद है.... जब आज से ठीक ४० वर्ष पहले, जब हमने एक छोटे पैमाने पर बिस्कुट बनाना शुरू किया था, उस समय हम पूना शहर की एक छोटे कमरे में सिर्फ कुछ ही रतल बिस्कुट बनाया करते थे।

तबसे हमने काफी प्रगति की है। हमारी प्रारंभिक कठिनाइयों के बावजूद भी हमारा विकास एवं प्रसार हुआ है। अब हमारे कारखाने में आई.एस.आई. (ISI) स्टैंडर्ड के अनुसार क्वालिटी बिस्कुट आधुनिक वातु-अनुकूलित फैक्टरी में बनते हैं। और हमारी गिनती भारत के प्रमुख बिस्कुट निर्माताओं में है।

हम अपने देश में कोको व चाकलेट उद्योग को स्थापित करने में भी सर्व प्रथम हैं।

हमारे सभी मित्रों एवं हितैषियों को — धन्यवाद

हमारे सभी बैंकवालों, डिपोजिटर्स और
शेयर होल्डर्स को — धन्यवाद

भारत व विदेश के हमारे सभी डिस्ट्रिब्यूटर्स,
स्टॉकिस्ट्स व डीलर्स को — धन्यवाद

हमारे सभी कामगारों एवं
कर्मचारियों को — धन्यवाद

अन्त में हमारे लाखों उपभोक्ताओं को — धन्यवाद

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२

मनुष्य का
विश्वास

सुशीला की
चाय-पार्टी की
विशेषता
क्या है?
MONACO
MONACO
पार्ले के
मोनेको
प्यारे बिस्कुट
पार्ले प्रोडक्टस् मेन्युफेक्चरिंग कंपनी प्राइवेट लि., बम्बई-२४

यह स्टोव अत्यंत कम इंधन पर जलता है तथा आपके समय की और पैसे की बचत भी करता है।
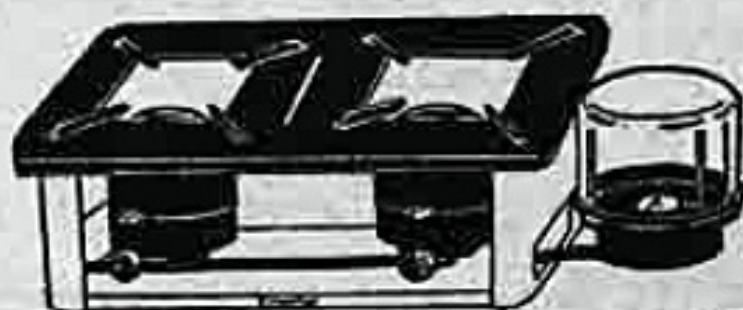
POPPAT JAMAL & SONS

182, BROADWAY, MADRAS-1. & 36-B, MOUNT ROAD, MADRAS-2.

BRANCHES: ERNAKULAM . HYDERABAD & BOMBAY.

VIJAYAWADA

पोपट जमाल ॲण्ड सन्स्

१८२, ब्रॉडवे, मद्रास-१ और ३६-बी, माऊंट रोड, मद्रास-२

शाखाएँ: एर्नाकुलम - हैदराबाद - बम्बई - विजयवाडा.

दीपावली की शुभकामनायें

AMARJOTHI
FABRICS

अमरज्योति फेब्रिक्स

हेन्डलूम में प्रख्यात नाम

(चादर और फर्निशिन्ग आदि के स्पेशलिस्ट)

पोस्ट बॉक्स : नं. २२. कारूर (द. भा.)   शाखायें : दिल्ली, बम्बई और मद्रास.

यदि आपको यह प्रश्न है कि महज १०/- रुपयों से किस बैंक में खाता खोला जा सकता है, तो भरोसा कीजिये कि हमें - इन्डीयन ओव्हरसीस बैंक को - आपको खातेदार बनाने में गर्व होगा। मित्रता और सेवा हमारा ब्रीद है और यकीन कीजिये कोई भी रकम हमारे लिए छोटी नहीं है।

दि इन्डीयन ओव्हरसीस बैंक लि.

प्रधान कार्यालय - मद्रास

एम. सीटी. मुत्तय्या	सी. पी. दुरैकन्नु
चेयरमेन	जनरल मेनेजर

खिलौने! हर शुभ अवसर के लिए!!

"लॉक-ए-बॉब" का सेट:
चमकदार हरे, लाल, नीले और पीले रंग के "बॉब" यानी गोले! नर्म प्लास्टिक के बने हुए ये गोले साथ जुड़ भी जाते हैं और अलग-अलग भी किये जा सकते हैं। अटूट, हलके और धुलनेवाले इन गोलों से बच्चे, घंटों बिना किसी खतरे के खेल सकते हैं।

सैनिक का बख्तर:
हर बहादुर सैनिक के लिये बख्तर, जो उसे और निडर बना देता है! बच्चों के लिये बिना खतरे का खिलौना! चमकदार धात के रंग के, हल्के-फुल्के प्लास्टिक के बने हुए बख्तर, तलवार, ढाल और शानदार कलगीदार फौलादी टोपी!

गुड़िया की देख-भाल का सेट:
हर बच्ची के लिये आकर्षक भेंट! इस सेट में दो बोतलें होती हैं—एक दूध के लिये और एक पानी के लिये। इनकी निपलें आसानी से निकाली जा सकती हैं। साथ ही अटूट प्लास्टिक की बनी हुई, गर्म पानी की थैली भी! छोटा सेट भी मिल सकता है, जिसमें दूध की बोतल और पानी की थैली होती है।

क्रिकेट गेंद और बल्ला:
प्लास्टिक का नया और निराला बैट (२६ इंच लंबाई) और बॉल! हल्के और धुलने वाले। भविष्य के हर टैस्ट क्रिकेटर के सपनों के खिलौने!

खिलौनों की हर दुकान पर मिलनेवाले POLY-WARE खिलौने

सूचना

एजेण्टों और ग्राहकों से निवेदन है कि मनीआर्डर कूपनों पर पैसे भेजने का उद्देश्य तथा आवश्यक अंकों की संख्या और भाषा संबंधी आदेश अवश्य दें। पता — डाकख़ाना, ज़िला, आदि साफ़ साफ़ लिखें। ऐसा करने से आप की प्रतियाँ मार्ग में खोने से बचेंगी।

—सर्क्युलेशन मैनेजर

★

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना!

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, "चन्दामामा"

एनर्जी
फूड
बिस्कुटों

देश की भावी पीढ़ी को स्वस्थ रखती है

जे.बी. मंघाराम ॲण्ड कं.

राज कपूर कृत
AK
जिस देश में गंगा बहती है
संगीत : शंकर जयकिसन

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हर वर्ष की तरह चमचमाती दीवाली फिर आई है और चन्दामामा का विशेषांक आपके हाथों में है।

इस विशेषांक में हम तेनाली रामकृष्ण की जीवन की दो घटनायें दे रहे हैं।

तेनाली रामकृष्ण की कहानियाँ दक्षिण भारत में उसी तरह प्रचलित हैं, जिस तरह बीरबल की उत्तर भारत में। बीरबल कवि न थे, तेनाली रामकृष्ण कवि भी थे। वे कृष्ण देवराय के आठ राजकवियों में एक थे। आशा है पाठकों को उनकी कहानियाँ पसन्द आयेंगी।

दीवाली के शुभ अवसर पर "चन्दामामा" परिवार की शुभ कामनायें स्वीकार कीजिये।

वर्ष : १२ नवम्बर १९६० अंक : ३

महाभारत

महारथी सात्यकी रास्ते में जो कोई योद्धा मिला, सेना मिली, उन सब का संहार करता, उस जगह पहुँचा, जहाँ अर्जुन युद्ध कर रहा था।

परन्तु युधिष्ठिर चिन्तित रहा कि अर्जुन का क्या हो गया था। सात्यकी भी, जो अर्जुन की सहायता के लिए गया था। वापिस न आया। उसने भीम से कहा—"न अर्जुन का पता मालूम है, न सात्यकी का ही, जो उसका पता मालूम करने गया था। तुम उन दोनों की सहायता करो।"

भीम ने युधिष्ठिर की रक्षा का भार धृष्टद्युम्न को सौंपा और रथ में सवार होकर उस दिशा की ओर चल पड़ा, जिस ओर अर्जुन और सात्यकी गये थे। उसको पहिले द्रोण ने रोका। द्रोण ने सोचा कि भीम भी अर्जुन और सात्यकी की तरह उसकी परिक्रमा करके आगे बढ़ जायेगा। परन्तु भीम ने यह न किया। यही नहीं उसने एक बड़ी गदा घुमाते फिराते द्रोण के रथ पर फेंकी। द्रोण रथ से कूद पड़ा।

कौरवों के उस व्यूह के मुख के सामने भीम ने धृतराष्ट्र के पुत्रों से प्रचण्ड युद्ध किया। कुण्डभेदी, सुषेण, दीर्घनेत्र, वृन्दारक, अभय, रौद्रकर्म, दुर्विमोचन, सुशर्मा, सुदर्शन आदि को मार दिया।

भीम उस जगह पहुँचा, जहाँ अर्जुन युद्ध कर रहा था। कुछ दूरी पर अर्जुन के दिखाई देते ही भीम ने ज़ोर से गर्जन किया। उस गर्जन को सुन युधिष्ठिर यह सोच बड़ा सन्तुष्ट हुआ कि अर्जुन जीवित था।

मुख - चित्र

इधर भीम का कर्ण ने मुकाबला किया, दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। आश्चर्य की बात तो यह थी कि भीम ने बाणों से इस तरह युद्ध किया कि कर्ण को रथ से उतरना पड़ा। कर्ण फिर एक और रथ पर चढ़कर युद्ध करने आया।

आखिर भीम को रथ से उतरना पड़ा। वह निहत्था भी हो गया।

उस समय भीम के प्राण कर्ण के हाथ में थे। परन्तु कर्ण ने कुन्ती को वचन दे रखा था—सिवाय अर्जुन के यदि कोई और पाण्डव उसके हाथ पड़ा, तो उसके प्राण न लेगा। इसलिए कर्ण ने भीम को बाण से भोंकते हुए कहा—"अरे पेटू, क्यों नहीं घर में ही खाते-पीते आराम से रहे, क्यों हम योद्धाओं से लड़ने निकले हो!"

भीम क्रोध के कारण फुंकारता-सा बोला—"अरे दुष्ट! तुम मेरे हाथ इतनी बार हराये जाने पर भी यों गर्व कर रहे हो! अगर दम है, तो मुझसे कुश्ती करो, मैं तुम्हें भी उस जगह पहुँचा दूँगा, जहाँ कीचक पहुँचा हुआ है।"

"इतने में अर्जुन के बाण कर्ण को आकर लगे। कर्ण, भीम को छोड़कर

चला गया। भीम सात्यकी के रथ पर चढ़ गया। अर्जुन, भीम और सात्यकी एक जगह इकट्ठे हो गये।

इसके बाद सात्यकी और भूरिश्रव का युद्ध हुआ। इस युद्ध में सात्यकी निःशस्त्र कर दिया गया। सात्यकी को मारने के लिए भूरिश्रव ने तलवार उठाई थी कि अर्जुन ने एक अर्ध चन्द्राकार बाण गाण्डीव पर रखा और भूरिश्रव का उठा हुआ हाथ काट दिया। फिर सात्यकी ने भूरिश्रव का सिर काट दिया। कुछ कौरवों ने कहा भी कि भूरिश्रव का सिर अन्याय से काटा

गया था। "जब निहत्थे अभिमन्यु को मारा था, तब न्याय कहाँ गया था!" सात्यकी ने उनसे पूछा।

जल्दी ही अर्जुन का रथ सैन्धव की ओर गया। यह देख दुर्योधन ने कर्ण को सैन्धव की रक्षा करने के लिए कहा— "भीम ने आज मुझे बहुत तंग किया— आज मैं और नहीं लड़ना चाहता, फिर भी मैं यथाशक्ति अर्जुन से लड़ूँगा।" कर्ण ने कहा।

सूर्य छुपनेवाला था। अगर कुछ देर और अर्जुन को आगे न बढ़ने दिया तो वह लज्जा के कारण मर जायेगा, यह सोच दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, कृप, अश्वत्थामा अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। भीम और सात्यकी, अर्जुन की सहायता कर रहे थे। उन तीनों से कर्ण ने भयंकर युद्ध किया।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा—"अर्जुन! सूर्यास्त के बारे में बिल्कुल चिन्ता न करो। मौका मिलते ही...." कहकर उसने अपने योगबल से अन्धकार पैदा किया।

कौरव वीरों के आनन्द की सीमा न रही। उन्होंने सूर्य की ओर देखा। सैन्धव ने भी गला सीधा करके देखा। कृष्ण ने कहा—"यही समय है।" अर्जुन ने इस तरह एक दिव्यास्त्र छोड़ा कि सैन्धव का सिर भूमि पर न गिरकर, उसके पिता के गोद में गिरा। सैन्धव का सिर जो कोई भूमि पर डाल देता, उसका सिर फूट जाता। सैन्धव के पिता ने ही यह शाप दिया था। उसका शाप उसको ही लगा। उस बूढ़े के उठते ही गोद में पड़ा सैन्धव का सिर भी नीचे गिर गया। सैन्धव के पिता का सिर सहसा फूट पड़ा।

अमृत मंथन

अमृत पाने की आशा से
गया वासुकी मथने सागर,
जयजयकार किया देवों ने
साथ उसीके तट पर आकर।

मथनी तो था मंथरगिरि ही
बना वासुकी रस्सी उसकी,
मुख का भाग गहा देवों ने
मिली पूँछ असुरों को उसकी।

बिगड़े इसपर असुर तुरत ही
बोले—"पूँछ न हम पकड़ेंगे,
आगे ही हम सदा रहे हैं
पीछे फिर क्यों यहाँ रहेंगे!"

हँसे इन्द्र मन ही मन सुन यह
बोले फिर—"हाँ, है स्वीकार,
मुख का असुर ही पकड़े
व्यर्थ पड़े अब क्यों तकरार!"

देवों ने तब पूँछ पकड़ली
असुरों ने जा सिर को पकड़ा,
और लगे सब सागर मथने
भूल परस्पर का झगड़ा।

लेकिन मंदर पर्वत का था
दुर्वह भार, कठिनतम घर्षण,
जिसे वासुकी सह न सका जब
गिरा शिथिल कर तन का बंधन।

असुर देख यह डरे बहुत ही
दिया वासुकी का मुख छोड़,
जिससे मंथर डूब गया झट
करता जल में भीषण शोर।

क्षीरोदधि के अतल गर्भ में
मंथरगिरि जब गया समा,
हाहाकार लगे सब करने
नहीं देर तक शोर थमा।

महेशनारायण सिंह

तभी अचानक सबने देखा
कछुआ आया एक विशाल,
जिसके कारण क्षीरोदधि में
लहरें उठने लगीं कराल।

वह था इतना बड़ा कि सारा
भूमंडल टिक जाता उस पर,
बड़े बड़े पर्वत को पल में
अगर चाहता जाता चटकर!

देखा कछुए को असुरों ने
रहे देखते ही मुँह बाये,
लेकिन विष्णु समझकर उसको
देवो ने निज शीश नवाये।

डुबकी लगा तभी वह कछुआ
मंदर को ऊपर ले आया,
और पीठ पर टिका उसे झट
सागर के ऊपर तैराया।

यह देख सुरों के औ' असुरों के
अंतर में नव हर्ष समाया,
दोनों दल ने फिर से मिलकर
मंथन में ही जोर लगाया।

लगा डोलने मंथर थर-थर
जैसे चलती मथनी घर-घर,
लगा खौलने तप्त सिंधु-सा
क्षीरोदधि का पल में अंतर।

प्रयत्न सफल यों होते लखकर
हुए असुर सब मद में चूर,
भूल विष्णु की कृपा, स्वयं को
लगे समझने सबसे शूर!

किंतु देव थे यही सोचते
'हैं कृपालु हम पर भगवान,
और बहुत ही पुलकित होकर
गाते रह रह स्तुति-गान।

धीरे धीरे भरा फेन से
क्षीरोदधि के ऊपर का तल,
अमृत आयेगा, इस आशा
से हुए सभी बिलकुल विह्वल।

लेकिन अमृत के बदले जब
निकला ज्वालामय हालाहल,
उसकी गर्मी से क्षण-भर में
मचा चतुर्दिक तब कोलाहल।

विष की भीषण ज्वाला से डर
भागे असुर-देवता सारे,
छोड़ सभी वासुकी को उधर
त्राहि त्राहि की मची पुकारें।

विष-ज्वाला से उन लोगों को
कहीं नहीं मिल पाया त्राण,
लगी सुलगने पृथ्वी सारी
झुलस चले जीवों के प्राण।

भागे भागे सभी देवता
गये विकल हो तब कैलास,
जिसके उज्ज्वल दिव्य शिखर पर
था परमेश्वर शिव का वास।

शिव के पाँव पकड़कर सबने
कहा—"करो रक्षा अब नाथ,
हालाहल की इस ज्वाला से
तुम्हीं बचा सकते हो नाथ!"

शिव करुणा से आर्द्र हुए तब
कहे सांत्वना के यों बोल—
"डरो नाहीं, मैं पी जाऊँगा
हालाहल को ही अब घोल।"

इतना कहकर पार्वती से
लेकर विदा किया प्रस्थान,
क्षीरोदधि के तट पर तत्क्षण
पहुँचे करने जग का त्राण।

खौल रहा था विष से सागर
उठती थी रह-रहकर ज्वाल,
गगन धुएँ से काला बिल्कुल
लगता था भीषण विकराल।

उसे देखकर शिव ने अपना
किया विराट तभी आकार,
औ' समेट विष हाथों से ही
लिया कण्ठ में शीघ्र उतार।

विष सारा बह रहा कुण्ड में
नहीं उदर में जाने पाया,
लीला लख यह शिव की सबने
'जय नीलकंठ' का नाद किया।

शिव के सर्प वहीं पर सारे
डोल रहे थे फण फैलाये,
थूक दिया उन पर ही शिव ने
जिससे वे विषधर कहलाये।

कालकूट विष रहा न भू पर
खतम हुआ जग का सब क्रन्दन,
शिव लौटे कैलास, इधर फिर
शुरू हुआ क्षीरोदधि-मंथन।

मथते मथते श्वेत हँस-सी
निकली जब इक सुन्दर गाय,
देव और मुनि बोले तत्क्षण—
"मिले हमें ही अब यह गाय।

गाय नहीं यह साधारण है
कामधेनु है इसका नाम,
जो भी माँगो, दे देती है
करती सब का पूरन काम।"

असुरों ने तब कहा—"हमें तो
केवल अमृत की ही चाह,
अमृत के आगे हमको है
नहीं किसीकी भी परवाह।"

सागर-मंथन शुरू हुआ फिर
कुछ देर रही मचती हलचल,
निकला फिर उससे अति सुन्दर
घोड़ा अद्भुत दिव्य धवल।

कहा उसे लखकर असुरों ने—
"घोड़ा यह सचमुच जँचता है,
बलि राजा के सिवा भला क्या
कोई इसको रख सकता है!"

[१०]

[चित्रसेन और उग्राक्ष ने अपने सैनिकों के साथ कपिलपुर के किले पर कब्जा कर लिया। काल कोठरी में बन्द कपिलपुर के राजा वीरसिंह को विमुक्त कर दिया। द्रोही नागवर्मा कहाँ है? वीरसिंह ने पूछा। चित्रसेन ने बताया कि उसको पकड़ लाने के लिए मैंने अपना सेनापति भेजा है। उसके बाद...]

चित्रसेन की बातें सुनकर वीरसिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उग्राक्ष की ओर देखा। फिर चित्रसेन की ओर सिर मोड़कर कहने लगा—"मैंने न सुना था कि तुम दोनों का सम्बन्ध मालिक और सेवक का सम्बन्ध था। इसलिए यह जानता हुआ भी कि नागवर्मा विद्रोह करनेवाला था, मैं अड़ोस-पड़ोस के राजाओं की सहायता न माँग सका।

हाँ, महाराज! उग्राक्ष इस तरह बातें करता रहा कि वे सन्देह का कारण बनीं। आपकी लड़की को भी कुछ ऐसे ही सन्देह हुए।" चित्रसेन ने कहा।

उसको यह कहता सुन कान्तिमति मुस्कराई। उग्राक्ष निश्चल खड़ा था। वह स्तब्ध-सा वीरसिंह को देखता खड़ा रहा। वीरसिंह इस तरह देखता रहा, जैसे सोच
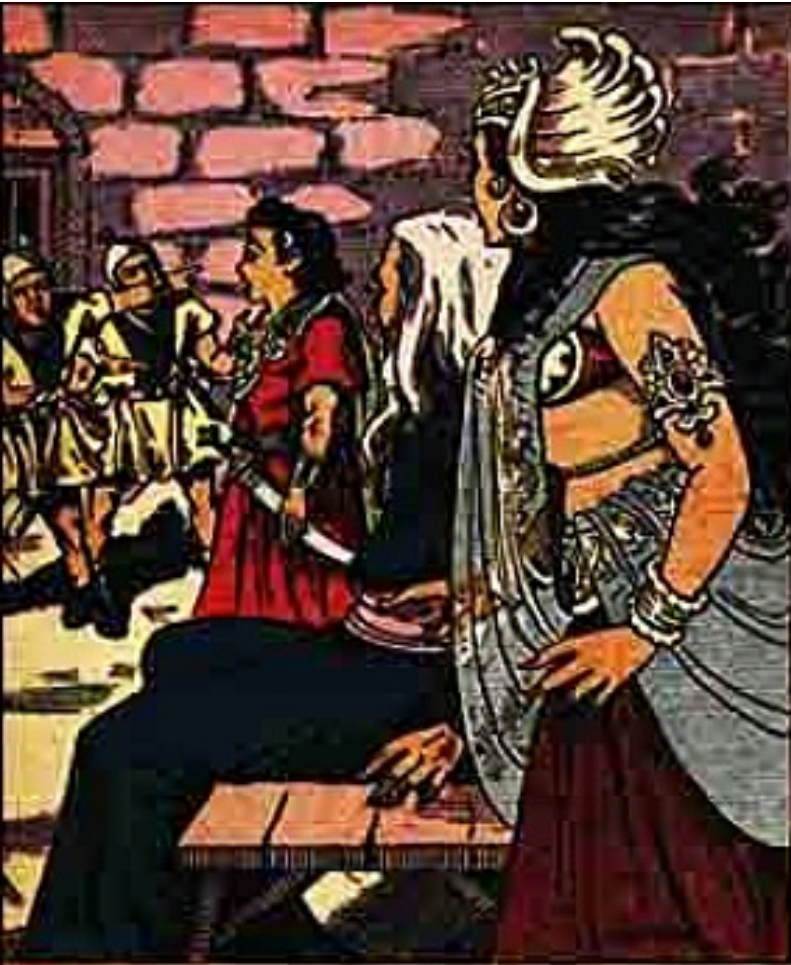
रहा हो—फिर उसने उग्राक्ष से पूछा—"चित्रसेन ने जो कुछ कहा है, उसमें कोई असत्य तो नहीं है?"

"चित्रसेन महाराजा ने जो कुछ कहा है, वह सब ठीक है। मैं इस प्रतीक्षा में हूँ कि वे कब विवाह करके महारानी लाते हैं।" उग्राक्ष ने कहा।

वीरसिंह अपनी शर्माती लड़की से कुछ कहनेवाला था कि दो सैनिक हाँफते-हाँफते भागे-भागे आये, वे चिल्लाये—"महाराज, महाराज नागवर्मा सेना के साथ किले के पास आ रहा है।"

नागवर्मा का नाम सुनते ही वीरसिंह चौंका, चित्रसेन के आश्चर्य की भी सीमा न थी। उसके मन में उस समय कितने ही सन्देह उठे। नागवर्मा क्या धवलगिरि को जीतकर वापिस आ रहा है? अगर यह बात नहीं है और वहाँ पराजित होकर यहाँ भागा-भागा आ रहा है, तो मेरा भेजा हुआ सेनापति कहाँ गया? कुछ भी हो, किले की रक्षा के लिए तैयार हो जाना ठीक है।"

"उग्राक्ष! तुम अपने सेवकों के साथ किले की रक्षा करो, बुर्जों पर कुछ तीरन्दाजों को नियुक्त करो। अमरपाल कहाँ है?" चित्रसेन ने पूछा।

"वह स्वयं यह जंगल में देखने गया है कि शत्रु सेना कितनी बड़ी है।" सैनिकों ने जवाब दिया।

"उग्राक्ष, अब तुम और तुम्हारे सेवक, किले के द्वारों...." चित्रसेन कह ही रहा था कि उग्राक्ष ने ज़ोर से हँसकर कहा—"महाराज, अब किले के फाटक हैं ही कहाँ? किले की दीवारों में अब जहाँ देखो वहीं द्वार हैं। सब जगह हमारे सेवकों ने छेद बना दिये थे। कई जगह

तो दीवार की नींव तक उखाड़ फेंकी थी और बुर्जों के बारे में? वे सब तो कूड़े कर्कट के रूप में जगह-जगह बिखरे पड़े हैं! आप ने शायद देखा नहीं कि किले को वश में करने के लिए हमने क्या-क्या किया था...."

"ओह!" चित्रसेन ने आश्चर्य प्रकट किया। "हम अच्छी आफ़त में फंसे। हम पर शत्रु हर तरफ़ से आक्रमण कर सकते हैं।" मैंने अनुमान न किया था कि नागवर्मा विजय पाकर इतनी जल्दी वापिस आ जायेगा।"

इतने में अमरपाल वहाँ भागा-भागा आया—"वह गद्दार महाराज, जीतकर नहीं आ रहा है, भागा-भागा आ रहा है, उसके साथ जो सेना है, वह भी खास बड़ी नहीं है, उस सेना का पीछा करती हुई एक और सेना दूरी पर दिखाई देती है। वह सेना शायद आपके पिता जी की है, नहीं तो आपकी भेजी हुई सेना है।"

अमरपाल यह कह रहा था कि उग्राक्ष इतनी जोर से हँसा कि सारा महल गूँज उठा। चित्रसेन बहुत आनन्दित हुआ। उसने
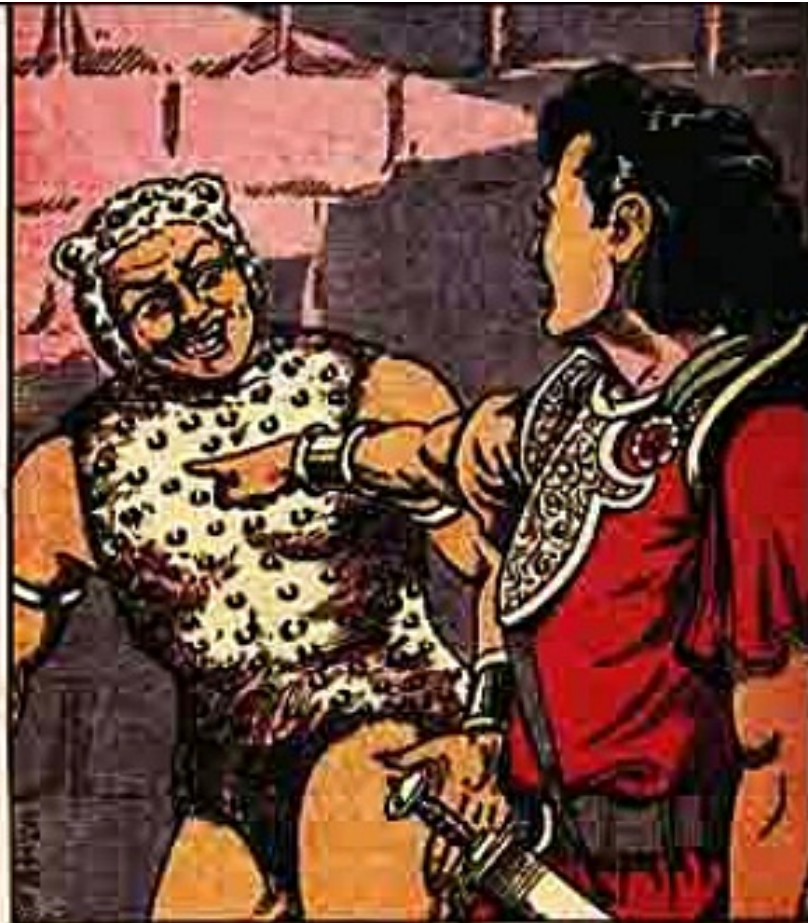
अमरपाल से कहा—"अमरपाल, तुम सैनिकों को एक जगह एकत्रित करो और मेरी प्रतीक्षा करो। उस विद्रोही का हम किले के सामने के मैदान में ही सर्वनाश कर देंगे।"

"मुझे एक बड़ी अच्छी बात सूझ रही है।" उग्राक्ष ने कहा।

"क्या है वह?" चित्रसेन ने पूछा।

"वह यह कि नागवर्मा को किले में आने दिया जाय, फिर उसको चारों ओर से घेर लिया जाय, ऐसा करने से उन सबका एक साथ नाश किया जा सकता है।" उग्राक्ष ने कहा।

"यह अच्छी चाल है महाराज! वह जानता ही है कि एक सेना उसका पीछा कर रही है। यह सोचकर कि इस किले में वह अपनी रक्षा कर सकेगा, वह यहाँ भागा भागा आ रहा है, जब वह जान जायेगा कि किला हमारे आधीन है, सम्भव है कि वह जंगलों में भाग जाये।" अमरपाल ने कहा।

यह सच है! चित्रसेन कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने उग्राक्ष की ओर मुड़कर कहा—"अगर उनको किले में आने दिया गया तो यह भी खतरा है न कि उनमें से कुछ राजमहल में घुस जायें?" उसने पूछा।

"यह खतरा न हो, यह देखना मेरे जिम्मे रहा महाराज! मेरे राक्षस सेवकों का बल अभी आप पूरी तरह नहीं जानते हैं। जब तक नागवर्मा को पकड़कर मार नहीं दिया जाता, तब तक इस प्रदेश में शान्ति नहीं होगी। अगर वह हमसे बचकर निकल गया, तो वह हमेशा हमारी बगल में छुरी की तरह रहेगा।" उग्राक्ष ने कहा।

"खूब कहा तुमने!" वीरसिंह ने उसकी प्रशंसा की। फिर सैनिकों से कहा—"अगर तुम में से किसी ने उस नागवर्मा को जीवित मुझे सौंपा, तो मैं उसको अपना राज्य दे दूँगा। जो उसका सिर काटकर लायेगा, उसको हज़ार सोने की मुहरें दूँगा।"

"आधा राज्य?" कान्तिमति ने चकित हो अपने पिता की ओर देखा।

"हाँ, आधा राज्य! उस द्रोही ने मुझे दुर्बल करके इतने दिन राज्य में अराजकता ही न पैदा की, परन्तु मुझे काली कोठरी में बन्द कर दिया और तरह तरह से मुझे सताया।" वीरसिंह ने कहा।

"परन्तु यह नागवर्मा को न मालूम हो कि किले में कोई है। सैनिक जहाँ तहाँ छुप जायें, जैसे ही वह सेना के साथ किले में घुसे, वैसे ही सब एक साथ उन पर हमला करें और उनको मार दें।" चित्रसेन ने कहा।

"हाँ महाराज! यह काम मुझे और अमरपाल को छोड़ दीजिये। आप वीरसिंह महाराजा, राजकुमारी, राजमहल में कहीं से हमारा पराक्रम देखिये।" उग्राक्ष ने कहा। फिर वह सेवकों की ओर मुड़कर गरजा— "कहाँ है हमारे सेवक?"

अमरपाल और उग्राक्ष के नेतृत्व में सैनिक और राक्षस किले के अन्दर के मकानों में पेड़ों के पीछे छुपने का प्रयत्न कर रहे थे कि किले के पासवाले जंगल में नागवर्मा पहुँचा। घोड़े पर खड़े होकर किले के बुर्जों की ओर देखते हुए उसने कहा—"करवीर! हमने जो सोचा था वही हुआ। शत्रु किले में घुसकर सब कुछ तहस नहस करके कहीं भाग गये हैं।"

यह करवीर अग्निद्वीप से आये हुए शेर का चमड़ा पहिननेवालों का सरदार था।
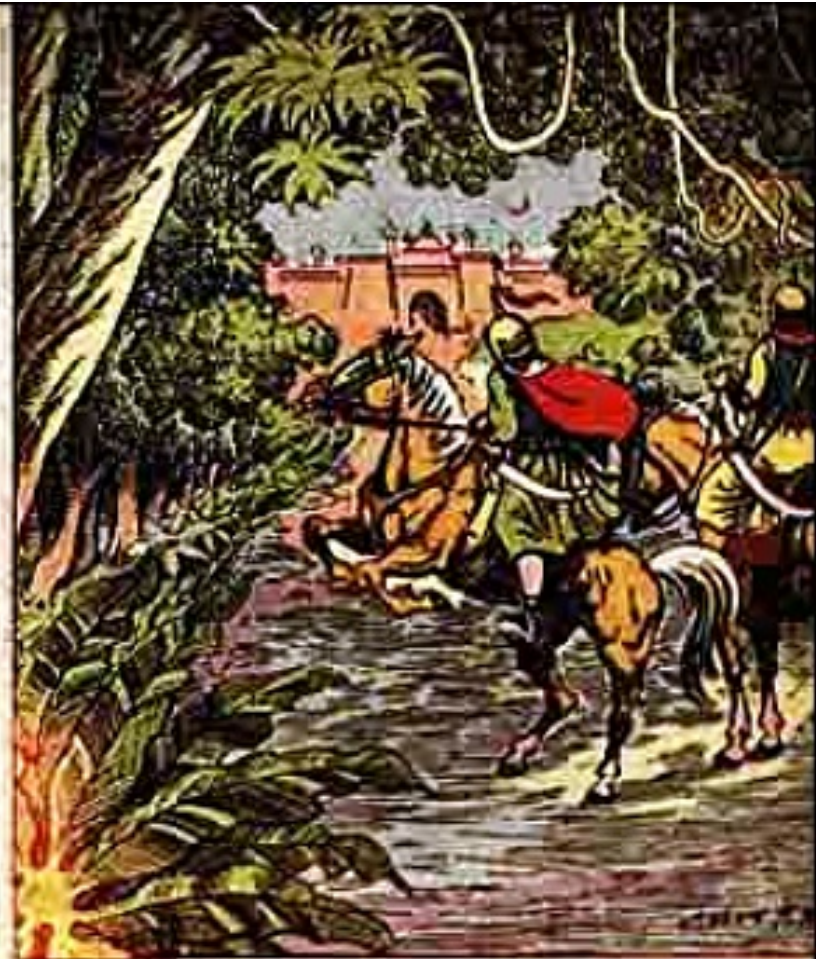
वह नागवर्मा के साथ अपने कुछ अनुचरों को लेकर गया। वहाँ चित्रसेन के पिता तारकेश्वर ने उन लोगों की यह गत बनाई कि नागवर्मा के साथ वह कपिलपुर के किले की ओर भागा आ रहा था।

"हाँ महाराज! जो आपने कहा है, वह ठीक है। ऐसा मालूम होता है कि शत्रुओं ने, जिन सैनिकों को हम छोड़ गये थे, उनको जीत लिया है और किले को अपने अधिकार में कर लिया है। पर अब कहीं कोई शत्रु नहीं दिखाई दे रहा है। जो कुछ किले में था उसे लूट-लाटकर वे
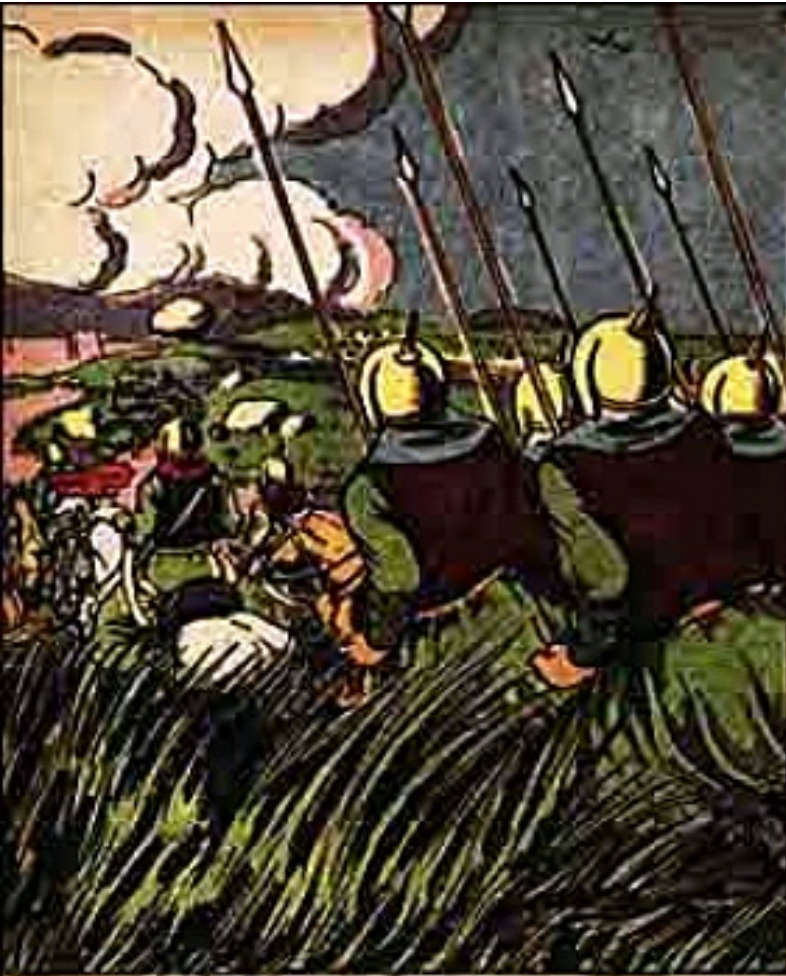
फिर चित्रसेन की राजधानी वापिस चले गये होंगे। मुझे तो इस बात का आश्चर्य है कि मेरे अनुचर और वे भयंकर पक्षी कहाँ है? कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" करवीर ने चकित होकर कहा।

"मेरे आश्चर्य का कारण यह नहीं है। मुझे आश्चर्य यह है कि काल कोठरी में बन्द वीरसिंह कहीं जीवित शत्रुओं को तो नहीं मिल गया है। अगर ऐसा हुआ है तो आगे आगे आपत्ति की आशंका है। कुछ भी हो, हमारे लिए यही अच्छा है कि हम किले के अन्दर जायें और तारकेश्वर की सेना के आने से पहिले अपनी रक्षा के लिए आवश्यक प्रबन्ध करें। किले की दीवारों की आड़ से हम शत्रुओं का अच्छी तरह मुकाबला कर सकते हैं और कोई रास्ता नहीं है।" नागवर्मा ने इधर उधर ध्यान से देखते हुए कहा।

इसके बाद, नागवर्मा और करवीर ने अपने अपने अनुचरों से कहा—"हमारा शत्रु पीछा कर रहे हैं। उस असंख्य सेना से यदि हमें बचना है, तो कपिलपुर का किला ही हमारी रक्षा कर सकता है। चलो चलें।" नागवर्मा ने जोर से शोर किया।

नागवर्मा और करवीर घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़े। उनके पीछे कुछ पदाति थे और उनके पीछे कुछ घुड़सवार। सवा घंटा बाद वे सब किले के सामनेवाले मैदान में पहुँचे। नागवर्मा और करवीर ने सैनिकों को ठहरने के लिए कहा और किले के मुख्य द्वार के पास जाकर अन्दर झाँक कर देखा। अन्दर सर्वत्र नीरवता थी। कहीं कोई न दिखाई दिया।

"कहीं इसमें कोई धोखा तो नहीं है?" नागवर्मा ने पूछा।

"धोखा क्या हो सकता है ?" किले में रखा सोना-चान्दी लूटकर शत्रु चले गये हैं। उनको शायद बूढ़ा वीर सिंह भी मिल गया होगा।" करवीर ने सोचते हुए जवाब दिया।

"हमारे सैनिकों में कुछ तो युद्ध में मारे ही गये होंगे, मगर कहीं कोई शव नहीं दिखाई देता। शव भी कैसे गायब हो गये ? कहीं उग्राक्ष अपने राक्षस सेवकों को तो नहीं लाया है ? मामला बड़ा उलझा हुआ-सा है।" नागवर्मा ने कहा।

नागवर्मा के यह कहते ही शेर का चमड़ा पहिननेवालों के नायक करवीर की हिम्मत जाती रही। उसे राक्षसों से बहुत भय था।

"महाराज, कुछ भी हो, अच्छा है कि हम एक काम करें।" करवीर ने नागवर्मा की गरदन पकड़कर कान में कहा।

"क्या है ?" नागवर्मा ने सन्देह-वश पूछा।

"किले को इतना निर्जन, नीरव पाकर मुझे आश्चर्य नहीं सन्देह भी हो रहा है। राक्षस और उनका नेता कहीं हमारी ताक में तो नहीं हैं। यह जान भी लिया जाय कि वे ताक में बैठे हैं, तो भी हमारे लिए इस किले को छोड़कर जाना खतरनाक है। तारकेश्वर की सेना, जो हमारा पीछा कर रही है, उस हालत में हमारा जंगली जानवरों की तरह शिकार करेगी। इसलिए पहिले हम किले में नहीं घुसेंगे, अपने कुछ सैनिकों को भेजेंगे। देखेंगे कि उन पर क्या बीतती है। फिर बाद में हम किले में घुस सकेंगे।" करवीर ने धीमे धीमे कहा।

(अभी है)

जन्मदिन — त्योहार

अगले दिन नरक चतुर्दशी थी कि उस दिन शाम की गाड़ी से बहिन और जीजा आये।

"गोपी, बहिन और जीजा आये हैं।" उसकी माँ ने कहा। दक्षिण की ओर के कमरे में पलंग पर पाँच वर्ष का गोपी औंधा लेटा हुआ था। उसने जवाब नहीं दिया।

"कहाँ है वह! क्यों नहीं आता है!" पिता ने पूछा। "मैं नहीं आऊँगा" गोपी की अस्पष्ट आवाज़ सुनाई दी।

बहिन और जीजा ने मुँह हाथ धोये।

"लगता है गोपी रूठा हुआ है।" जीजा ने कहा।

"उसके क्या कहने, बात बात पर अकड़ उठता है। मानो भी उसने हमारी नाकों दम कर रखा है।" माँ ने कहा।

"क्या कर रहा है!" बहिन ने पूछा।

"उसका सिर! इस बार उसका जन्म दिन और त्योहार एक ही दिन आ रहे हैं। दोनों ही मनाने होंगे, कह रहा है।" पिता ने कहा।

"हाँ, दोनों को मिलकर मनाना होगा।" जीजा ने कहा।

"यह नहीं होगा, दोनों को अलग अलग मनाना होगा।" कहता गोपी लम्बा मुख किये निकर घसीटता कमरे से बाहर आया।

गोपी बड़े गुस्से में था। जब बहिन ने उसको पास लेना चाहा तो उसने उसका हाथ दूर कर दिया।

"गोपी, दोनों को मनाने के लिए मैं एक उपाय बताता हूँ। कल तेरा जन्म दिवस मनाया जाये और परसों दीपावली।" जीजा ने कहा।

रघुवीर

"और फिर नरक चतुर्दशी?" गोपी ने पूछा।

"अच्छा, तो गोपी कल एक काम करो। तुम दो जोड़े नये कपड़े पहिनो।" बहिन ने कहा। "बेटी, मैंने उसके लिए दो जोड़े कपड़े सिलवाये हैं। कह रहा है कि वे काफ़ी नहीं हैं।" माँ ने कहा।

"हाँ, कैसे काफ़ी होंगे? कल सवेरे उसको दो बार स्नान करवाइये। एक इसलिए कि उसका जन्म दिवस है, दूसरा इसलिए कि त्यौहार है।" जीजा ने कहा।

"इसी तरह पकवान भी दुगने खाओ। तब ठीक हो जायेगा।" बहिन ने कहा।

सब हँसे और गोपी ने मुँह फुला लिया। "यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता।" उसने गुस्से में कहा।

"तब और क्या किया जाये?" उसके पिता ने ऊबकर पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि जन्म दिवस अलग और त्यौहार अलग मनाये जायें।" गोपी ने ज़िद करते हुए कहा।

"अच्छा, तो तू ही बता कि क्या किया जाय?" माँ ने कहा।

गोपी ने कुछ नहीं कहा। उसे लगा कि जन्म दिवस और त्यौहार के एक साथ आने से वह ठगा गया था। क्या करने से यह अन्याय दूर किया जा सकता था, वह सोच नहीं पा रहा था।

"देखो गोपी, हम इस बार त्यौहार के लिए नहीं आये हैं, तुम्हारे जन्म दिवस के लिये आये हैं।" बहिन ने कहा।

"इस साल तेरा जन्म दिवस सब मिलकर मना रहे हैं, कितनी बड़ी बात है।" जीजा ने कहा।

कई ने कई तरह से समझाया, पर गोपी न माना। "लगता है, उस पर

कोई भूत सवार हुआ है, उसको छोड़ दो।" पिता ने कहा।

*　　　*　　　*

पटाकों के शोर से गोपी सोता सोता उठा। तरह तरह का शोर हर तरफ़ से आ रहा था। तब बच्चे उठकर, स्नान करके नये कपड़े पहिनकर पटाके बजा रहे थे। गोपी को पटाकों की बू भी आई। "बहिन ने आकर पूछा—"क्यों, गोपी उठ गये हो! दान्त साफ़ करो, ताकि शिर स्नान कर सको।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये, जा—" गोपी ने कहा। उसका हठ अभी न गया था।

सिर पर तेल मलता जीजा आया, उसने कहा—"देखो गोपी, यदि तुमने हठ किया, तो न जन्म दिवस मना पाओगे न त्यौहार ही। उठकर नहाओ, तेरे लिए जन्म दिवस का उपहार लाकर दूँगा।"

गोपी ने रूठे रूठे ही सिर की मालिश करवाई। नये कपड़े पहिने। जब जीजा ने पटाके जलाये, तो वह देख देख खुश हुआ। खुश होते समय भी उसने अपना मुँह सिकोड़े रखा।

बाजार जाकर उसका जीजा उसके लिए रेशम का एक रुमाल खरीदकर लाया, गोपी ने उसकी ओर गुस्से में देखा। उसके हाथ से उसने उसे छीन लिया। परन्तु उसने अपनी खुशी न दिखायी।

गोपी को न सूझा कि क्या करे। उसने अकेला कहीं रहना चाहा। रसोई में माँ रसोई कर रही थी। बैठक में पिताजी कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। बरामदे में जीजा कोई पत्रिका पढ़ रहे थे।

गोपी कमरे में गया। बहिन विस्तर पर लेटी कोई पत्रिका पढ़ रही थी। वह कहीं और जाने की सोच रहा था कि इतने में बहिन ने पन्ना पल्टा। उसमें रंग बिरंगा चित्र दिखाई दिया।

गोपी धीमे से आकर बहिन के पास बैठ गया। पत्रिका के चित्र की ओर बहुत देर तक देखता रहा। "यह क्या है बहिन?" उसने पूछा। "कोई कहानी है।" अन्यमनस्क हो उसकी बहिन ने कहा।

"क्या मुझे चित्र नहीं देखने दोगी?" गोपी ने बहिन को मनाते हुए पूछा।

बहिन ने उसको पत्रिका दे दी और रसोई में चली गई यह सोचती कि कहीं माँ को उसकी सहायता की आवश्यकता न हो। जब बहिन वापिस आई, तब तक गोपी तीन बार पन्ने पलटकर कई बार चित्र देख चुका था। फिर उसने बहिन से सब कहानियाँ पढ़वाकर सुनीं।

गोपी का हठ जाता रहा। उसमें वह परिवर्तन देख सब को आश्चर्य हुआ।

क्या बता सकते हो वह पत्रिका क्या थी, जिसने गोपी को यों बदल दिया था?

जरा ठहरिये तो—इसने आपकी माचिस बोक्स में पटाके छिपा रखे हैं।

चचा, मैं अब बम्ब जलाऊँगा। बम्बों को तो बड़े ही जलाये करते हैं, इसीलिए मैंने मूँछे लगा ली हैं।

माँ माँ, पिताजी का काला चश्मा, तीन पहियोंवाली साइकल, गाडी के बदले दूकानदार कितने पटाके देगा?

मेरे भाई को चूमने पुचकारने के लिए यहाँ टिकट बेचे जायेंगे। एक टिकट का दाम तीन पटाके हैं—दस मेहताब। खरीदिये।

बापू, उठो नहाओ न!

अरे यह उठता नहीं मालूम होता—अरे बापू, उठो।

माँ, तू जा, मैं उठा दूँगी।

Shankar

पिताजी, आपकी पत्नी झूठ कहेगी, सुनना मत। धूप में पटाके सूख रहे थे। मैंने एक ही जलाया...बाकी सब खुद ही जल उठे।

रे गोपी, सीधी तरह उनमें से आधे मुझे दे दे। नहीं तो मैं बहिन को बुलाकर गाने को कहूँगा। तब तेरे पटाकों का शोर सुनाई ही न देगा, खबरदार।

जीजा का प्रताप

बहिन किवाड़ के पीछे छुप गई। जीजा के बहुत बुलाने पर भी नहीं बोली। जब रंगा को एक आना दिया तो बहिन उछलकर इधर आ गई।

जी...जी...मेरी नानी ने आपसे दस मेहताब, बीस-दस पटाके उधार माँग लाने के लिए कहा है।

बहिन एक नया हिसाब सुनो। धूप में दस पटाके, पचास मेहताब, दो अनार रखे हुये थे। अगर उसमें से एक अनार जला दी गई तो कितने बचेंगे!

[७]

कारामोरान नदी के दक्षिण में मंजी नाम का एक बड़ा देश था। यह बहुत ही सम्पन्न था। इस देश का, बड़े खान के जीतने से पहिले, फक्फूर नाम का एक राजा था। सिवाय बड़े खान के फक्फूर से बड़ा कोई राजा न था। यह राजा अदर्श रीति से प्रजा का पालन किया करता था। निर्धनों के प्रति बहुत दया दिखाता। अगर गरीब अपने बच्चों को पाल न पाते, तो वह उन बच्चों की जन्मपत्री लिखाता, अनाथालय में उनको रखता, उनका पालन-पोषण करता। उस देश में इस तरह अनाथालय कितने ही थे। उसमें २० हज़ार बच्चे राजा के खर्च पर पल रहे थे।

इस राजा की एक और आदत थी। यदि वह कहीं जा रहा होता और रास्ते में दो बड़े मकानों के बीच कोई फूस का घर होता, तो पूछताछ करता कि ऐसा क्यों था, अगर मालूम होता कि बीच के घरवाला गरीब था, तो वह दोनों तरफ़ के मकानों के बराबर बीच का घर भी बनवाकर देता।

पर इस राजा में एक कमी भी थी—वह यह कि वह योद्धा न था। जनता भी युद्ध न करना जानती थी। इसका कारण,

मंजी देशवासियों का चिर काल से शान्ति और शान्ति से सम्बन्धित सुखों का अनुभव करना ही था। इस देश पर कभी किसी ने आक्रमण न किया था। इस देश के प्रति नगर के चारों ओर बड़ी-बड़ी खाइयाँ थीं। इनको पार करने के लिए पुल थे। शत्रुओं का इन खाइयों को पार करके शहर पर हमला करना असम्भव-सा था।

क्योंकि मंजी देश में योद्धा न थे, न घोड़े ही, इसलिए बड़ा खान इस देश को जीत सका, नहीं तो उसके लिए भी इसपर हमला करना असम्भव था। ज्योतिषियों ने भी इस देश के विषय में बताया था कि जब तक सौ आँखोंवाला नहीं आता, तब तक इस देश को शत्रु का भय न था।

बड़े खान कुबिलाय खान के नीचे बारह शक्तिशाली सामन्त थे। उनमें बचान चिन्ग सियान्ग भी एक था। १२६८ ई. मे. बड़े खान ने इस बचान को बहुत-से घुड़सवार सेना और बहुत-सी नावें देकर मंजी देश को जीतकर आने के लिए कहा।

नावों की सहायता से नदी पार करता, बयान ने मंजी राज्य में प्रवेश किया। हाय-न्गान चौ नगर में घुसकर उसने लोगों से हार स्वीकार करने के लिए कहा। जनता ने वैसा करने से इनकार कर दिया। बयान ने उनका कुछ न बिगाड़ा। वह एक और नगर में गया। उस नगर के वासियों ने भी घुटने टेकने से इनकार कर दिया। इस तरह पाँच नगरों में गुज़रने के बाद छटे नगर को उसने कब्जे में कर लिया। कहा जाता है कि उसने इस नगर के सब वासियों को मरवा भी दिया।

यदि बयान ने पहिले पाँच नगरों में कुछ न किया था, तो इसका कारण था। वह जानता था कि बड़ा खान उसके पीछे

एक और बड़ी सेना भेज रहा था। उन पाँचों नगरों को छोड़कर बयान ने एक के बाद बारह नगर जीते। फिर मंजी की राजधानी क्न्सिाय नगर में पहुँचा। राजा और रानी इसी क्न्सिाय नगर में रहा करते थे।

राजा डर गया। हज़ार नौकाओं में अपनी सेना को चढ़ाकर समुद्र के द्वीपों में चला गया। उन द्वीपों से वह फिर वापिस न आया। इस बीच, रानी ने राजधानी में रहकर बयान के हमले का मुकाबला करने की कोशिश की। इतने में उसको मालूम हुआ कि उसकी शत्रु सेना का सेनापति का नाम बयान था। बयान का अर्थ सौ आखोंवाला है। उसे ज्योतिषियों की बात याद आई, तुरत निराश हो उसने हार स्वीकार कर ली।

जब राजधानी ही बड़े खान के हाथ आ गई, तो और नगरों ने भी अपने को उसे सौंप दिया। एक ही एक नगर ने पराजय न मानी। उसका नाम सियान्ग-यून्ना-पू था। मंजी देश के वश में आने के तीन वर्ष बाद भी यह नगर घेरा डाले शत्रु सेना से लोहा लेता रहा।

यह कैसे सम्भव हो सका? यद्यपि बड़े खान की सेना ने इसे घेर तो लिया था, वे इसे क्यों न जीत सके?

इस नगर के तीन तरफ़ गहरी झील थी। यह उनकी शत्रुओं से रक्षा करती रही। केवल उत्तर की तरफ़ से बड़े खान की सेना आक्रमण कर सकती थी। नगरवासियों ने शत्रुओं के घेरे की कोई परवाह न की क्योंकि वे अपनी आवश्यक वस्तुयें झील पार कर ले आते थे। इसलिए घेरा बिल्कुल असफल रहा। पालोल, मार्को और उनके पिता, जो बड़े खान के यहाँ काम करते थे,

यदि उनकी सहायता न करते तो सियान्ना-यून्ना-पू कभी भी बड़े खान के हाथ न आता।

एक दिन सियान्ना-यून्ना-पू से कुछ लोग बड़े खान के पास गये और उसको बताया कि क्यों तीन सालों से घेरा असफल रहा था।

"इस नगर को जीतने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही होगा।" बड़े खान ने कहा।

तब पालोल ने बताया कि उस नगर को जीतने का एक साधन था और उसको बनानेवाले भी बड़े खान के साथ थे। वह पत्थर फेंकनेवाला यन्त्र था। सौ मन भारी पत्थर भी वे बहुत दूर फेंक सकते थे।

"तो ऐसे यन्त्रों को तुरत बनवाओ।" बड़े खान ने पोलो को आज्ञा दी। पालोल के आदमियों में ये यन्त्र बनानेवाले दो थे। उन्होंने तुरत तीन यन्त्र तैयार किये। बड़े खान और उनके कर्मचारी उनका उपयोग देखकर बड़े आनन्दित हुए।

बड़े खान के सैनिक इन यन्त्रों को सियान्ना-यान्ना-पू तक पहुँचाया। इस यन्त्र का छोड़ा हुआ बड़ा-सा पत्थर जब नगर के मकानों पर पड़ा, तो हाय-हाय मच गई। लोग डर गये। उन्होंने सोचा कि इस उत्पात का निवारण उनके पास न था। यह सोच उन लोगों ने भी उन्हीं शर्तों पर नगर को समर्पित कर देना का निश्चय किया, जिन शर्तों पर और नगरों को बड़े खान ने अपने वश में किया था।

(अभी है)

मैं जिस पलंग पर लेटा था, वह आठ गज ऊँचा और २० गज चौड़ा था। उठा तो देखता हूँ कि दोनों तरफ़ दो भयंकर चूहे मुझ पर कूदनेवाले थे। तुरत मैंने अपना चाकू निकाला और एक को भोंककर मैंने मार दिया। दूसरा भाग गया। चूहे की पूँछ ही छः फुट थी।

इतने में घर की मालकिन आई। चूहे का खून देखकर उसने अपनी नौ वर्ष की लड़की को मेरी देख-भाल का भार सौंपा।

उस लड़की ने मुझे अपने खेलनेवाले झूले में रखा और मुझे अपनी भाषा सिखाई। वह क्योंकि छोटी लड़की थी, इसलिए चालीस फीट ही ऊँची थी।

उस दिन घर के मालिक का कोई बूढ़ा मित्र मुझे देखने के लिए आया। उसकी ऐनक मुझे चन्दामामा की तरह लगी। मैं हँस पड़ा।

वह घर के मालिक को एक तरफ़ ले गया और उसे सलाह दी कि मुझे वह शहर शहर में दिखाकर पैसा कमाये।

घर के मालिक ने मुझे एक पेटी में रखा, लड़की की गोद में उस पेटी को रखकर पास के गाँव के एक मेले में ले गया।

यह घोड़ा जब एक ही कदम में चालीस फीट पार करता तो मैं गेंद की तरह ऊपर नीचे गिरता। उस गाँव में उतरने के बाद...

"बौने का आश्चर्यजनक प्रदर्शन" उसने सारे गाँव में ढिंढोरा पिटवाया। एक कमरे में तीन सौ वर्ग फीट मंच पर प्रदर्शन का प्रबन्ध किया गया। मेरा काम था—प्रश्नों का उत्तर देना, तलवार निकालकर घुमाना और इधर उधर घूमना।

मेरी प्रसिद्धि सर्वत्र फैल गई। ज्यों ज्यों पैसा अधिक आता गया, त्यों त्यों मालिक का लालच भी बढ़ता गया। ...ीधे राजधानी में पहुँचा।

रोज बारह बार प्रदर्शन करने के कारण मैं खूब थक गया। मेरी हालत देखकर उस लड़की की आँखों में आँसू आ गये।

उस दिन उस देश की रानी के यहाँ से मुझे बुलवा आया। मालिक के साथ मैं तुरत राजमहल गया।

रानी के हाथ की सब से छोटी अंगुली को चूमकर मैंने नमस्कार किया। उसने मुझे अपने यहाँ रहने के लिए कहा। मैंने कहा कि मुझे भी वह पसन्द था।

मालिक को हज़ार मुहरें देकर भेज दिया गया। मैंने यह शर्त की कि वह लड़की मेरे साथ ही रहे।

मैं इस किसान के लालच के कारण कितना सताया गया था, यह सब मैंने टूटी फूटी भाषा में रानी से कहा।

वह यह देख चकित हुई मुझ जैसे छोटे प्राणी में भी इतना ज्ञान था। उसने मुझे राजा को दिखाया। राजा ने मुझे पहिले तो गुड़िया समझकर मेरी परवाह न की। मेरी बातें, हाव-भाव देखकर उनको फिर विश्वास हो गया।

उसने इधर उधर करके मुझे और गौर से देखा। उसने आज्ञा दी कि मेरी अच्छी तरह देखभाल की जाय।

मेरे निवास के लिए १६ फीट चौड़ी १२ फीट ऊँची एक लकड़ी की पेटी बनवाई गई। दो कुर्सियाँ और मेजें दी गईं।
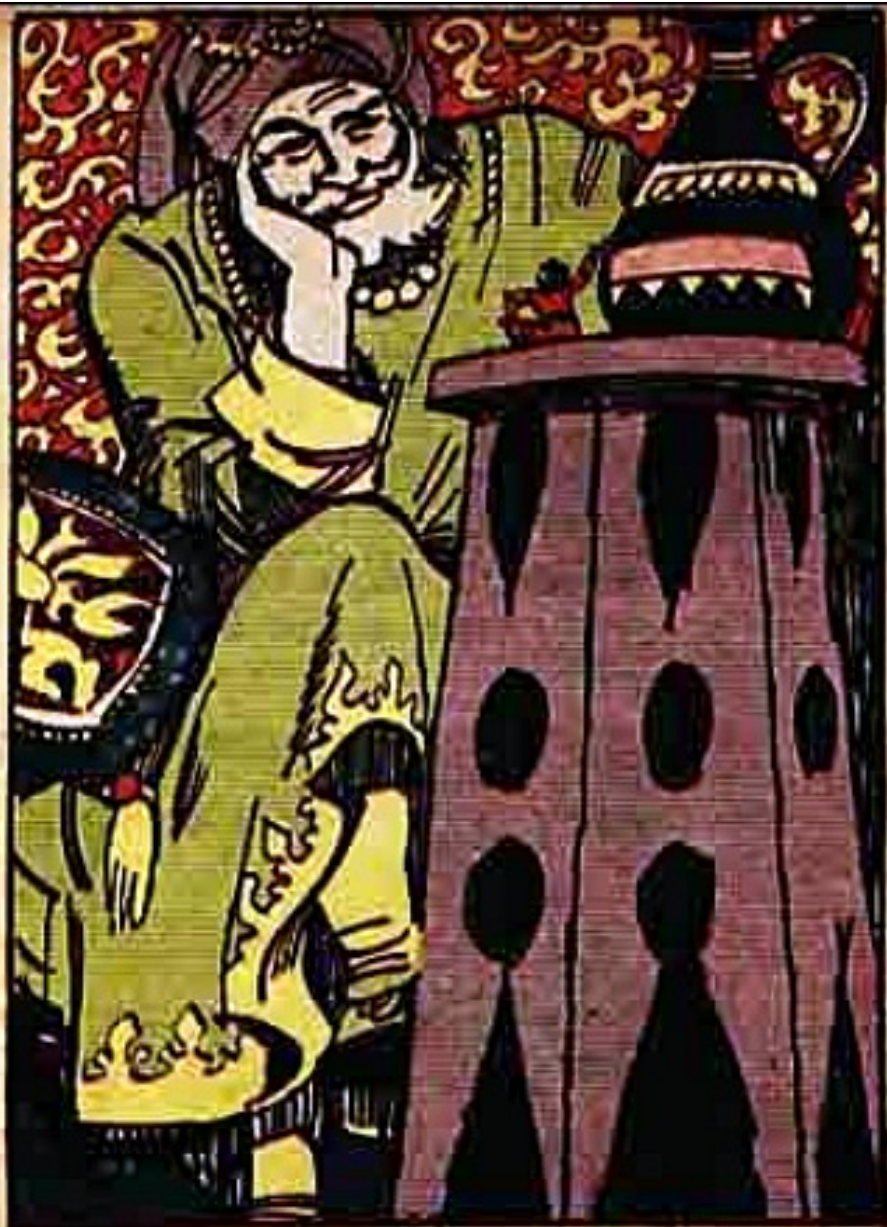
रोज़ रानी के साथ भोजन करता और राजा के साथ गप्पें मारता। वह मेरे देश के बारे में प्रश्न करता और जवाब बड़े ध्यान से सुनता।

रानी को मैं बहुत प्यारा था। कभी कभी वह मुझे अपने मुँह के पास खड़ा करके शीशे में देखा करती।

राजा की नौकरी में तीस फीट ऊँचा एक बौना था। उसकी मुझ से न बनती थी। उसने मुझे एक दिन मलाई के प्याले में डाल दिया।

नागों का आनन्द

गन्धर्व राजा जीमूतकेतु के जीमूतवाहन नाम का एक लड़का था। जीमूतकेतु बूढ़ा हो गया, वन में तपस्या करने के लिए पत्नी के साथ जाने से पहिले उसने जीमूतवाहन का राज्याभिषेक किया। परन्तु जीमूतवाहन राजमहल के भोग विलासों के आनन्द लेने की अपेक्षा वन में माता पिता के साथ रहकर उनकी सेवा करना चाहता था, इसलिए उसने भी वनवास ग्रहण किया। वह माता पिता के साथ रहने लगा। शासन का सारा भार मन्त्रियों पर पड़ा।

एक वन में कुछ दिनों के रहने के बाद वहाँ कन्द-मूल कम हो गये। इसलिए बूढ़े राजा ने अपने लड़के से मलय पर्वत के प्रान्त में एक अच्छे आश्रम को देख आने के लिए कहा। जीमूतवाहन अपने मित्र आत्रेय ब्राह्मण को लेकर मलय प्रान्त के गौर्याश्रम में गया। वे दोनों गौरी आश्रम के पास पहुँचे ही थे कि उनको किसी युवती का वीणा वादन के साथ मनोरंजक गायन सुनाई दिया।

उस समय देवी की आराधना करनेवाली थी विश्ववसु नामक गन्धर्व की लड़की, मित्रवसु की छोटी बहिन। नाम था मलयवती। जीमूतवाहन उसके गायन पर मुग्ध हो गया और बाहर खड़ा खड़ा सुनने लगा। इस बीच मन्दिर में से किसी का सम्भाषण सुनाई दिया। "इस कन्या देवी की आराधना करने से क्या लाभ? यह तुमको उपयुक्त पति तो दे न सकेगी!" मलयवती से उसकी एक सहेली ने कहा।

इस सम्भाषण से यह साफ़ था कि उस गानेवाली का विवाह न हुआ था। इसलिए उसको देखना अनुचित न था। जीमूतवाहन यह सोच मन्दिर में घुसा। तब मलयवती और जीमूतवाहन ने एक दूसरे को देखा, वे आपस में प्रेम करने लगे। परन्तु उनका प्रेम उनके मन में ही रह गया। मलयवती लज्जावश अतिथि का सत्कार भी न कर पाई। इतने में उसके लिए घर से बुलावा भी आ गया।

इसके बाद जीमूतवाहन अपने माँ बाप को गौर्याश्रम में लाया।

जब से जीमूतवाहन को देखा था, तब से मलयवती प्रेम के कारण जली-सी जा रही थी। एक दिन वह अपनी सहेलियों को लेकर चन्दन लता गृह में गई। वहाँ सहेलियों ने उसके शरीर पर चन्दन लेपन किया। केले के पत्तों से वे पंखा कर रही थीं कि जीमूतवाहन अपने मित्र आत्रेय के साथ वहाँ आया। संगमरमर के आसन को छोड़कर दो स्त्रियाँ और अन्दर चली गईं।

वहाँ उनके सम्भाषण से यह प्रकट होता था कि जीमूतवान किसी के प्रेम में तप रहा था। पर वह स्त्री कौन थी, मलयवती

न जानती थी। जीमूतवाहन ने जिस स्त्री को प्रेम किया था, उसका चित्र संगमरमर के आसन पर उसने खींचा। उसे मल्यवती ने न देखा। उसे ईर्ष्या हुई कि जिस जीमूतवाहन को वह इतना प्यार कर रही थी, वह किसी और से प्रेम कर रहा था।

इतने में जीमूतवाहन को खोजता मल्यवती का भाई मित्रवसु वहाँ आया। जीमूतवाहन ने जो चित्र बनाया था, उसको केले के पत्ते से छुपाकर मित्रवसु से बातचीत की।

"मेरे पिताजी, विश्ववसु ने मुझसे तुम्हें यह कहने के लिए कहा है कि वे मेरी बहिन, मल्यवती का तुम से विवाह करना चाहते हैं।"

"मैं तुम्हारे परिवार से अवश्य सम्बन्ध करना चाहता हूँ। चूँकि मेरा मन किसी और को चाहता है, मैं यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं कर सकता।" जीमूतवाहन ने कहा। वह न जानता था कि वह मल्यवती से ही प्रेम कर रहा था।

जीमूतवाहन को यूँ कहता सुन मल्यवती मूर्छित हो गई।

बचाओ।" बगल में ही जीमूतवाहन था। वह भागा-भागा आया और उसने मलयवती के गले में से बेल निकाल फेंकी। फिर जो बातचीत हुई उसमें सब सन्देहों का निवारण हो गया। जीमूतवाहन जान गया कि मित्रवसु ने जिस लड़की की बात कही थी, वह मलयवती ही थी। केले का पत्ता उठाकर मलयवती ने देखा कि जिस प्रेमिका का चित्र संगमरमर पर जीमूतवाहन ने बनाया था, वह स्वयं उसका ही था। उन दोनों का शीघ्र ही यथाविधि विवाह हो गया।

"इसकी कौन-सी बात है, यदि इसके पिता इससे कहेंगे, तो यह अवश्य मान जायेगा।" सोचता, मित्रवसु चला गया।

इस बीच सहेलियों के सेवा शुश्रुषा करने पर मलयवती होश में आई।

"ज़रा देखकर तो आओ कि भाई हैं कि नहीं!" उसने सहेली को भेजा और एक बेल से फाँसी लगाकर मर जाने का प्रयत्न किया। मलयवती की मानसिक दशा एक सहेली जानती थी। इसलिए वह वहीं आड़ में खड़ी-खड़ी यह सब देख रही थी, वह चिल्लाई—"बचाओ,

उसी समय मित्रवसु ने नये जीजा को दुखद वार्ता सुनाई। मतंग नामक शत्रु ने जीमूतवाहन का राज्य हथिया लिया था।

"उस मतंग को मैं अभी जाकर, चीर फाड़कर मार दूँगा। ज़रा मुझे अनुमति दो।" मित्रवसु ने कहा।

"जब मेरा मत यह है कि मैं दूसरों के लिए अपने प्राण त्याग दूँ, तब कैसे किसी को मारने की अनुमति मैं दे सकता हूँ?" कहकर जीमूतवाहन ने मित्रवसु को अहिंसा का उपदेश दिया।

थोड़ा समय बीता। एक दिन मित्रवसु, जीमूतवाहन मिलकर मलयपर्वत के समुद्र के

तट पर ज्वार देखने गये। "देखो, ये पर्वत सफेद-सफेद हिमालय के शिखरों की तरह हैं।" जीमूतवाहन ने कहा।

"ओ, तुम उनको पर्वत गलत समझ रहे हो, वे पर्वत नहीं है, वे नागों की हड्डियों के ढ़ेर हैं।" मित्रवसु ने कहा।

"इतने नाग कैसे यकायक मर गये!" जीमूतवाहन ने पूछा।

"एक समय में गरुत्मन्त यहाँ आया। वह अपने पंखों से समुद्र के जल को हटाकर सब नाग खा गया। तब नागों के राजा वासुकी ने गरुत्मन्त से एक तरह का समझौता किया—वह यह कि वह रोज उसको एक नाग बलि देगा ताकि इस तरह अन्य नागों की रक्षा हो सके।

"वाह, वासुकी के हज़ार सिर हैं, दो हज़ार जीभ हैं। उसमें एक जीभ ने भी क्यों नहीं कहा, गरुत्मन्त, आज मुझे खाकर एक नाग के प्राण की रक्षा कर।"

उसने मन ही मन सोचा—"यदि मुझे अपना देह गरुत्मन्त के आहार के लिए देना पड़ गये और इस तरह यदि एक नाग की भी रक्षा कर सकूँ, तो मैं

कितना धन्य होऊँगा।" इतने में वहाँ नौकर आया। उसने मित्रवसु से कहा—"आपको पिताजी बुला रहे हैं।"

मित्रवसु ने जाते हुए जीमूतवाहन से कहा—"यह जगह अच्छी नहीं है, यहाँ ज्यादह देर रहना ठीक नहीं है।" कहकर नौकर के साथ चला गया।

"नहीं, ज़रा पानी तक हो आऊँ।" कहकर जीमूतवाहन समुद्र की ओर चला। "अरे बेटा, शंखचूड़, तुम्हारी मौत देखने की नौबत मुझपर आ पड़ी है।" किसी का रोना सुनाई दिया।

पास ही वह शिला थी, जहाँ नाग मारे जाते थे। आज गरुत्मन्त के आहार बनने की बारी शंखचूड़ की थी। उसकी माँ बूढ़ी थी, वह उसका इकलौता लड़का था। एक किंकर लाल कपड़े लिये खड़ा था। लाल कपड़े इस बात के चिन्ह थे कि जो कोई उस दिन वह पहिनेगा और शिला पर लेट जायेगा उसे गरुत्मन्त आकर, खाकर चला जायेगा।

शंखचूड़ मरने के लिए तैयार हो गया, उसने बड़े धीरज से लाल कपड़े ले लिये। परन्तु उसकी माँ, ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। वह उसको आश्वासन भी न दे पाता था। इस समय जीमूतवाहन वहाँ आया और वहाँ आकर उसने सारी परिस्थिति जानी पहिचानी, पुत्र शोक में तो वह माँ पगला-सी गई थी। उसने जीमूतवाहन के पैरों पर पड़कर कहा—"ओ, गरुत्मन्त! आज नागराज ने मुझे तुम्हारे आहार के लिए भेजा है। मुझे खा लो।"

उसकी स्थिति देखकर जीमूतवाहन का दिल पिघल उठा।

"माँ, गरुत्मन्त नहीं हूँ। अगर तुमने ये लाल कपड़े दिये, तो मैं गरुत्मन्त का

आहार बनकर तुम्हारे लड़के के प्राणों की रक्षा करूँगा।" जीमूतवाहन ने कहा।

"जो यह कह सकता है, वह मेरे लिए शंखचूड़ से भी अधिक है। बेटा, मैं इसके लिए नहीं मानूँगी।" बुढ़िया ने कहा। जीमूतवाहन के बहुत कहने पर भी शंखचूड़ ने भी लाल कपड़े नहीं दिये। गरुत्मन्त के आने का समय हो गया था। शंखचूड़ गोकर्णेश्वर की प्रदक्षिणा करने के लिए भागा। उसकी माँ भी उसके साथ गयी।

ठीक उसी समय मलयवती की माँ ने एक नौकर से जीमूतवाहन के लिए लाल कपड़े भेजे। जीमूतवाहन ने उनको लेते हुए कहा—"तुम चलो। मालकिन को मेरे नमस्कार कहना।" "जैसी आपकी आज्ञा" कहकर नौकर चला गया। जीमूतवाहन उन कपड़ों को पहिनकर, उस बध्य शिला पर लेट गया। इतने में गरुत्मन्त आया। उसको पकड़कर खाने के लिए मलयपर्वत के शिखर पर ले गया।

इस बीच जीमूतवाहन के लिए उसकी ससुराल से एक नौकर जीमूतकेतु के घर आया। यह पता लग गया कि न वह ससुराल में था, न अपने घर में ही। इतने में जीमूतवाहन की चूड़ामणि आकाश से
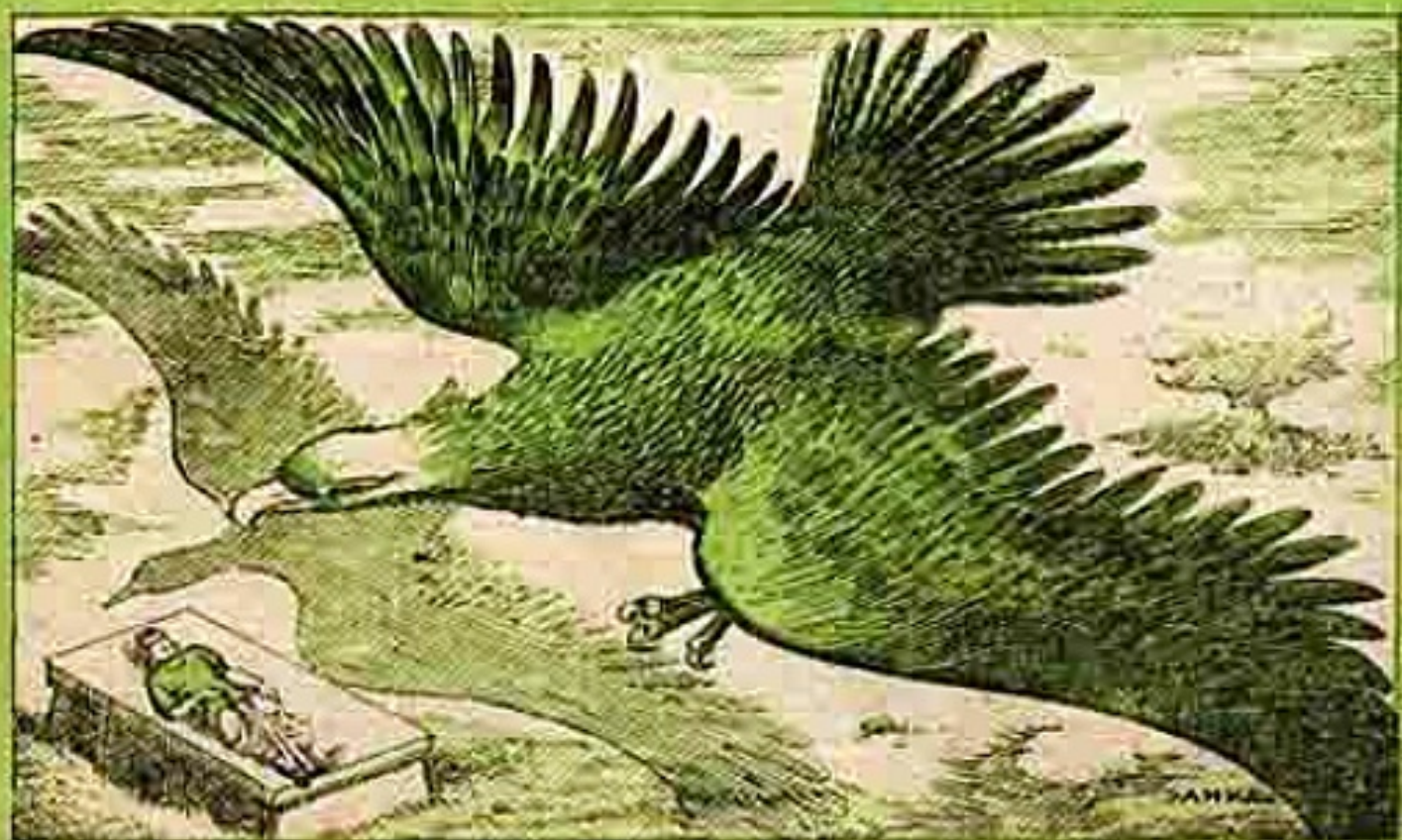
खून में भीगी हुई पास ही गिरी। जीमूतवाहन की माँ ने उसे पहिचान लिया।

उसी समय, लाल कपड़े पहिनकर शंखचूड़ उस तरफ़ आया। उसकी बातों से जाना जा सकता था कि जीमूतवाहन गरुत्मन्त का आहार हो गया था। जीमूतकेतु उसकी पत्नी और मलयवती ने अग्नि-प्रवेश करने का निश्चय किया।

"मैं पहिले जाकर गरुत्मन्त से मिलूँगा। आप अग्नि ले आइये।" कहकर शंखचूड़ चला। गरुत्मन्त एक तरफ़ जीमूतवाहन को खाता जाता था, पर जब उसने देखा कि उसके मुख पर न भय था, न चिन्ता ही। यही नहीं, उसको सन्तुष्ट पा गरुत्मन्त ने पूछा—"तुम कौन हो?"

"अरे भूखे हो, पहिले अपनी भूख बुझा लो।" जीमूतवाहन ने कहा। इतने में शंखचूड़ ने आकर कहा—"गरुत्मन्त, छोड़ो, उसे छोड़ो। वह नाग नहीं है। मुझे खाओ।" वह भागा भागा वहाँ आया था।

जब दो को लाल कपड़ों में देखा, तो गरुत्मन्त न जान सका कि कौन नाग था। शंखचूड़ ने अपने फण दिखाये। जब गरुत्मन्त को पता लगा कि वह गन्धर्व को खा रहा था, तो उसको बड़ा पश्चात्ताप हुआ। जीमूतवाहन ने उसको उपदेश दिया कि वह कभी जीव हिंसा न करे।

गरुत्मन्त स्वर्ग गया। वहाँ से वह अमृत लाया। उसने उसको जीमूतवाहन पर और नागों की हड्डियों के ढ़ेर पर छिड़का। जीमूतवाहन के साथ सब नाग भी जीवित हो गये। उसके बाद जीमूतवाहन ने अपना राज्य ही वापिस न ले लिया, वह गन्धर्वों का सम्राट भी बना दिया गया। मलयवती के साथ उसने सुखपूर्वक राज्य किया।

सोने का पहाड़

एक समय रूस में ग्रीष्क नाम का एक किसान का लड़का रहा करता था। गाँव में उसका पेट पलता न था। इसलिए वह एक फावड़ा कन्धे पर रखकर मजदूरी करने गया। बड़े बाजार में बहुत से लोग खड़े थे, जो मजदूरी पाने की कोशिश में थे। ग्रीष्क भी उनमें जा शामिल हुआ। कभी कभी कोई व्यापारी आता और मजदूरों में से एक को बुला ले जाता। वह घंटों खड़ा रहा पर किसी ने ग्रीष्क को नहीं बुलाया।

इतने में शोर करती एक सोने की गाड़ी उस तरफ़ आई। उसमें दो सफेद घोड़े जुते हुए थे। ग्रीष्क ने सोचा कि सब मजदूर उस गाड़ी को घेर लेंगे। पर उन्होंने ऐसा न किया। उस गाड़ी को कुछ दूरी पर देखते ही मजदूर सब भाग गये। केवल ग्रीष्क ही खड़ा रहा।

गाड़ी में से एक व्यापारी ने सिर बाहर निकालकर पूछा—"काम करोगे?" ग्रीष्क ने कहा—"मैं काम के लिए ही खड़ा हुआ हूँ।" व्यापारी ने पूछा—"दिन भर के लिए कितनी मजदूरी चाहते हो?" ग्रीष्क ने थोड़ी देर सोचा, फिर कहा—"एक दिन के लिए सौ रूबल मजदूरी दीजिये।" "केवल सौ रूबल ही?" व्यापारी ने पूछा।

"अगर कोई इससे कम पर आये, तो ले जाइये। आपको आता देख सब मजदूरों को भागते मैंने देखा है।" ग्रीष्क ने कहा।

"तो, कल सवेरे-सवेरे घाट पर आओ। मैं तुम्हारी इन्तज़ार करता रहूँगा।" कहकर व्यापारी गाड़ी पर चला गया।

घनश्याम नागर

अगले दिन सूर्योदय के समय ग्रीष्क घाट पर गया। वहाँ व्यापारी की नौका छूटने को तैयार थी। ग्रीष्क के चढ़ते ही वह छोड़ दी गई। बहुत दिन समुद्र में यात्रा करने के बाद वह एक द्वीप में पहुँची। द्वीप में ग्रीष्क ने देखा कि आग की लपटें उठ रही थीं। व्यापारी से जब उसने यह कहा तो उसने बताया—"वे आग की लपटें नहीं हैं। मेरा सोने का महल धूप में इस तरह चमक रहा है।"

व्यापारी की नौका ज्यों ही किनारे लगी, त्योंहि उसकी पत्नी और लड़की दिखाई दी। व्यापारी की लड़की देखकर ग्रीष्क के मन में प्रेम उपजा। उसने कभी न सोचा था कि संसार में इतनी सुन्दर भी कोई होगी। ग्रीष्क भी क्योंकि बहुत सुन्दर था, इसलिए वह लड़की भी उसको देखते ही प्रेम करने लगी।

उस रात को सोने के महल में एक दावत दी गई। "आज पेट-भर कर खाओ, पीओ। कल से काम शुरु करेंगे।" ग्रीष्क से व्यापारी ने कहा। उस दिन ग्रीष्क ने वह भोजन खाया, जो राजा महाराजे खाया करते हैं।

भोजनों के बाद व्यापारी की लड़की भ्रीष्क को अलग ले गई। उसके हाथ में एक पिटारी रखकर कहा—"इसको हमेशा अपने पास रखो। इसमें लोहे का टुकड़ा और चिकमक पत्थर है। इस द्वीप में यदि तुम पर कभी आपत्ति आये, तो लोहे को इस पत्थर पर मारो—तुरत आपत्ति टल जायेगी।" उसने चुपचाप कहा।

अगले दिन भ्रीष्क, व्यापारी को लेकर एक पहाड़ के पास गया। वह सोने का पहाड़ था। व्यापारी ने भ्रीष्क को पहाड़ की चोटी पर चढ़ने के लिए कहा। क्योंकि पहाड़ बहुत चिकना था इसलिए उसके पैर को सहारा न मिला और वह पहाड़ पर चढ़ न पाया।

"लगता है तुम में काफ़ी बल नहीं है।" व्यापारी ने भ्रीष्क को कुछ पीने को दिया। उसने उसे मुख से लगाया ही था कि वह बेहोश गिर पड़ा।

तुरत व्यापारी ने उस घोड़े को मार दिया, जो वह साथ लाया था। उसके पेट में उसने भ्रीष्क रखा और सो गया। स्वयं जाकर वह झाड़ियों में छुप गया। थोड़ी देर में दो बड़े-बड़े पक्षी, घोड़े को अपने

नाखूनों से पकड़कर चोटी पर ले गये। वहाँ वे उसको नोंच नोंच कर खाने लगे। थोड़ी देर में घोड़े का कंकाल मात्र रह गया।

जब ग्रीष्क को होश आया तो वह चिल्लाया—"अरे व्यापारी तुम कहाँ हो!"

"मैं पहाड़ के नीचे हूँ। तुम पहाड़ पर हो, तुम अपने फावड़े से पहाड़ के उपरले भाग के सोने को खोदकर नीचे लुढ़काओ।" व्यापारी ने उत्तर दिया।

ग्रीष्क शाम तक सोना खोदकर नीचे लुढ़काता रहा। व्यापारी ने अपनी गाड़ियों को सोने से भर लिया। "ग्रीष्क काफ़ी है। बहुत उपकार किया है, मैं जा रहा हूँ।"

"और मैं!" ग्रीष्क ने पूछा।

व्यापारी ने जोर से हँसकर कहा—"तुम वहीं रहो। तुम जैसे निन्यानवें आदमी वहीं रह गये थे। तुम सौंवें हो।" वह गाड़ियाँ ले गया।

ग्रीष्क पहिले तो डरा कि दुष्ट व्यापारी के कारण उसे पहाड़ पर भूखा प्यासा मरना होगा। पर उसे तब व्यापारी की लड़की की दी हुई पिटारी याद आई। उसने वह पिटारी खोली और लोहे को
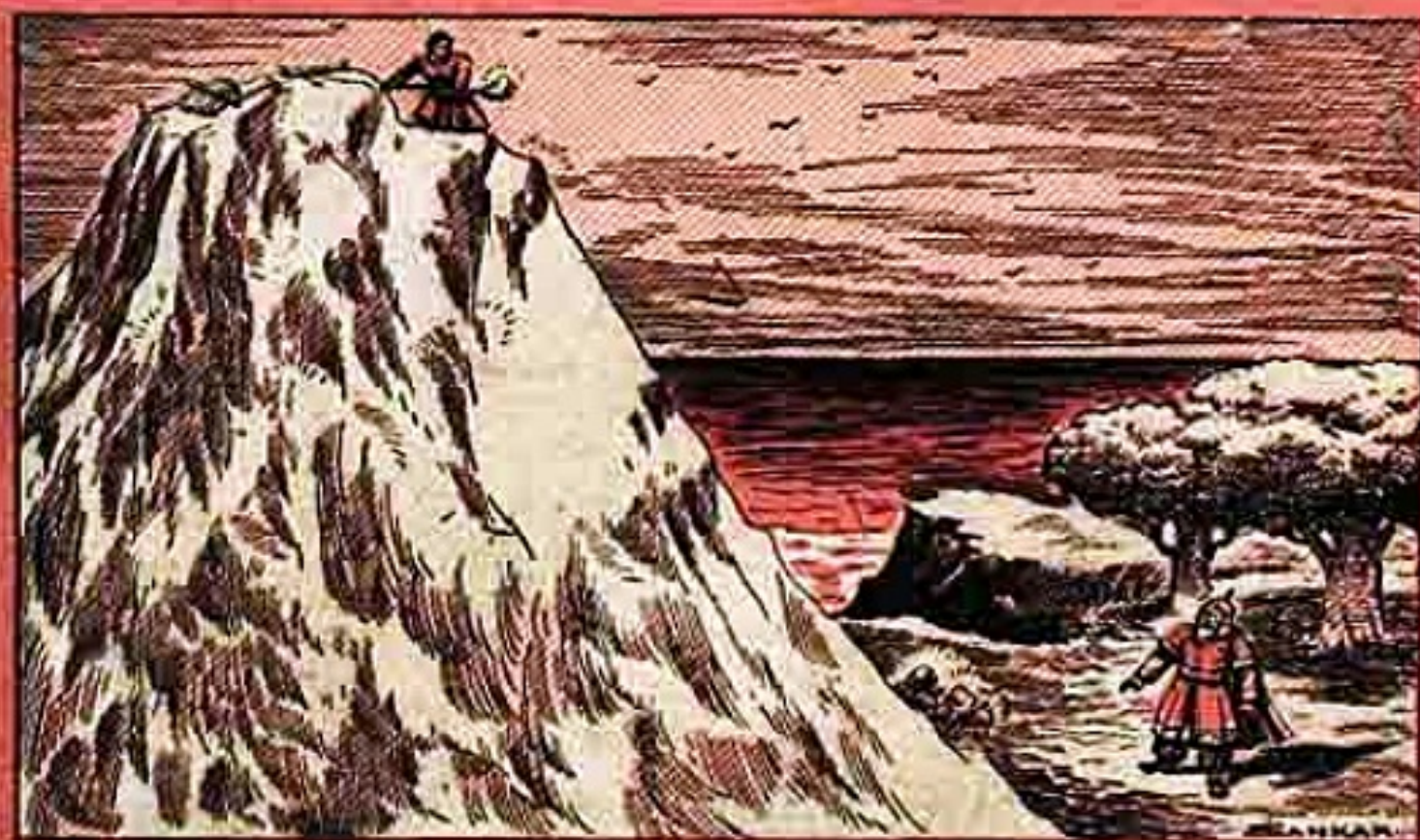
चिक्मक पत्थर पर पीटा। उसमें से दो मोती गिरे। वे दोनों युवक बन गये। क्या चाहिये? उन्होंने ग्रीष्क से पूछा।

"मुझे नीचे पहुँचाओ।" ग्रीष्क ने कहा। अगले क्षण वह समुद्र के तट पर था। थोड़ी देर में उस तरफ़ एक जहाज़ आया। नाविकों की खुशामद कर कराकर वह जहाज़ पर चढ़कर अपने देश चला गया।

थोड़ा समय बीता। फिर ग्रीष्क फावड़ा कन्धे पर डालकर बड़े बाजार में मजदूरों के साथ खड़ा हो गया। सोने की गाड़ी में व्यापारी उस तरफ़ आया। उस गाड़ी को देखते ही सिवाय ग्रीष्क के सब मजदूर भाग गये। व्यापारी ने उस जगह गाड़ी रोकी, जहाँ ग्रीष्क खड़ा था। बाहर झाँककर देखा। ग्रीष्क से पूछा—"काम करोगे?" ग्रीष्क काम करने के लिए मान गया।

"दिन भर की कितनी मजदूरी लोगे?" व्यापारी ने ग्रीष्क को बिना पहिचाने पूछा।

"दो सौ रुबल दिलवाइये।" ग्रीष्क ने कहा।

"दो सौ रुबल ही? उसमें से आधा भी मैंने किसी को नहीं दिया है।" व्यापारी ने कहा।

"आप चाहें तो दीजिये, नहीं तो किसी और को ले जाइये, मैंने देख लिया है कि आपको आता देख सब भाग गये हैं। ग्रीष्क ने कहा।

"तो कल सूर्योदय के समय घाट पर आओ। मैं तुम्हारी इन्तजार करूँगा।" कहकर व्यापारी गाड़ी में चला गया।

अगले दिन ग्रीष्क व्यापारी की नौका में चढ़कर द्वीप में गया, इस बार भी सब कुछ पिछली बार की तरह हुआ। दोनों जब सोने के पहाड़ के पास पहुँचे, तो व्यापारी ने ग्रीष्क को पहाड़ पर चढ़ने के लिए कहा। ग्रीष्क चढ़ न सका।

"लो यह दवा पीओ। ताक्त आयेगी।" कहता ग्रीष्क के व्यापारी ने कुछ पीने को दिया। "मेरे पास भी पीने को कुछ है, पहिले आप उसे पीजिये।" कहते हुए ग्रीष्क ने अपनी पानी की बोतल से व्यापारी को कुछ पीने को दिया। क्योंकि व्यापारी को कोई सन्देह न था इसलिए उसने उसे पीया और वह बेहोश गिर गया।

ग्रीष्क ने एक घोड़े को मारा। व्यापारी को उसमें रखकर, सीकर, वह झाड़ियों में जा छुपा। पक्षी आये। व्यापारी और घोड़े को उठाकर चोटी पर ले गये। घोड़ा खाकर वे चले गये, व्यापारी कंकाल से बाहर आया। वह चिल्लाया—"अरे कहाँ है?"

"आप पहाड़ की चोटी पर हैं, मैं पहाड़ के नीचे हूँ। मैं जा रहा हूँ। आप वहीं रहिये। अब तक निन्यानवें हो गये हैं, आप सौवें हैं।" उसने व्यापारी से कहा। उसने उसके घर आकर उसकी लड़की से विवाह किया। वह सोने के महल में आराम से रहने लगा।

मय सूद के

एक गाँव में एक गरीब किसान रहा करता था। जब फसलें ठीक न होतीं तो कर्ज़ करता, और जब फसल होती तो सारी फसल सूद में ही दे देता। इस तरह वह अपनी सारी जमीन खो बैठा। उस स्थिति में वह साहुकार के पास गया। "देखो, मुझे अब तुम्हें कानी कौड़ी भी नहीं देनी है। जो कुछ मेरे पास था, वह सब मैं खो बैठा हूँ। तुमने बहुत-सा धन कमाया है। धन कमाने का गुर जरा मुझे भी बता दो।"

"अरे पगले! धन तो राम के देने पर ही मिलता है।" साहुकार ने कहा।

किसान उस राम से रुपया माँगने निकल पड़ा। उसकी पत्नी ने उसको तीन रोटियाँ बनाकर दीं। कुछ दूर जाने के बाद किसान ने एक ब्राह्मण देखा। अपनी पोटली नीचे रखी और एक रोटी उस ब्राह्मण के हाथ में रखी। "मैं राम जी को देखने निकला हूँ। अगर आप रास्ता जानते हों, तो क्या बता सकेंगे?" ब्राह्मण ने रोटी ले ली, और अपने रास्ते चला गया।

किसान कुछ दूर ही गया था कि योगी के दर्शन हुए। किसान ने योगी को दण्डवत करके अपनी पोटली में से एक रोटी देकर कहा— "राम के पास जाना है, किस ओर रास्ता है।" योगी चुपचाप अपने रास्ते चला गया।

थोड़ी दूर और जाने के बाद रास्ते के किनारे, एक और गरीभ दिखाई दिया। लगता था कि उसने बहुत दिनों से कुछ न खाया था। किसान को दया आई। वह उसके साथ ही बैठ गया और उसने अपनी तीसरी रोटी भी उसको दे दी।

उस गरीब ने उस रोटी को खाकर पूछा—"कहाँ जा रहे हो भाई।"

विनीता

"सुना है, राम से मिलने पर धन मिल सकता है। देखने जा रहा हूँ। जिस किसी से भी पूछा उसने रास्ता न बताया। अगर जानते हो, तो जरा बताओ।" किसान ने कहा।

गरीब ने हँसकर कहा—"मैं ही राम हूँ। तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है। लो यह शंख लो। इसे कैसे बजाना होगा मैं बताता हूँ। तुम जो चाहोगे, इस शंख के बजाते ही मिल जायेगा।" किसान शंख बजाने का गुर भी सीख गया।

उसके बाद किसान को किसी प्रकार की कमी न रही। जो कुछ वह चाहता शंख के बजाते ही उसे मिल जाता। एक दिन साहुकार ने किसान से सारा भेद मालूम कर लिया। वह उसका शंख चुराकर अपने घर ले गया। पर वह उसको बजा न सका।

इसलिए साहुकार ने किसान के पास आकर कहा—"यह देखो, तुम्हारा शंख मेरे पास आ गया है। मैं उसे तुम्हें एक शर्त पर दूँगा। इस शंख से जितना तुम्हें मिलेगा, उसका दुगना मैं चाहता हूँ। अगर यह नहीं मानते हो, तो मैं शंख को तुम्हारे पुराने कर्ज के बदले ले लूँगा। किसान और क्या कहता, वह मान गया। साहुकार ने शंख वापिस कर दिया। उसके बाद शंख जितना किसान को देता, उससे दुगना साहुकार को देता।

इतने में एक दिन किसान को एक बात सूझी। उसने अपने मन में सोचा—"मेरी एक आँख चली जाये।" और उसने शंख बजाया। किसान की एक आँख चली गई। साहुकार की दोनों आँखें चली गईं। किसान यह देख सन्तुष्ट हुआ।

कभी, तेनाली में रामकृष्ण नाम का एक लड़का रहा करता था। वह पाठशाला न जाता। शहर में हमेशा आवारागर्दी किया करता।

एक दिन उसके पिता के एक मित्र ने उसको देख डांटा फटकारा। "रामकृष्ण तुम्हें शर्म नहीं आती। छोटे बच्चों के साथ खेल रहे हो!"

"तुम जैसे बड़े तो खेलने के लिये आते नहीं हैं!" रामकृष्ण ने कहा। "तुम्हें तुम्हारे पिता ढूंढ रहे हैं।" उन्होंने कहा।

"क्यों? बासा भात खा जो आया हूं।" रामकृष्ण ने कहा। "इसलिये नहीं, इसलिये कि तू पाठशाला गया है कि नहीं।" उन्होंने कहा।

मित्र ने बहुत समझाया, पर रामकृष्ण ने सुना नहीं।—"थोड़ी देर भी खेलने नहीं देते..." कोसता चला गया।

उस लड़के की खूबसूरत देखकर एक सिद्ध पुरुष ने उसे पुकारा—"इधर आओ।" "एकबार खेल बन्द करके इधर तो आओ।"

"तुम बातें बन्द करके जप क्यों नहीं करते।" रामकृष्ण ने कहा। "अच्छा, बेटा, तुम मेरे

साथ काली के मन्दिर चलो।" सिद्ध ने कहा। "तुम्हारा नाम क्या है बेटा?" "मेरा नाम रामकृष्ण है। मेरे पिता का नाम रामय्या है। हमारा गोत्र है कौन्डिन्यन। मैं तुम्हें एक मन्त्र बताऊँगा। तुम उसे जपोगे तो काली प्रत्यक्ष होकर तुम्हें...।" "क्या जो मैं चाहूँगा, वह देगी?" "वाह

तुम सब हो, निर्भीक हो, जो तुम चाहोगे, वही माँग लोगे।" सिद्ध ने कहा। "अगर वे देंगी तो मैं विद्यायें ही माँगूंगा।" सिद्ध ने रामकृष्ण को मन्त्र बताया। "भक्ति और श्रद्धा से इसका जप करो, बेटा। तुम्हारी मनोकामना पूर्ति होगी।" "विद्या किसी और को देनी चाहिए। तुम

मुझे उपयुक्त लगे। विद्वान होकर वृद्धि करो।" यों आशीर्वाद देकर सिद्ध चला गया।

फिर रामकृष्ण ने भक्तिपूर्वक मन्त्र जपा। काली देवी, जिसके हज़ार सिर थे और आठ हाथ थे, प्रत्यक्ष हुई।

देवी को देखकर उसको साष्टाङ्ग करना तो अलग, वह ज़ोर से हँसा। देवी नाराज़ हो गई। तुरत उसने कान पकड़कर—

"माँ, गलती हो गई। हम सब का एक ही सिर है। मगर यदि जुकाम हो गया तो नाक सम्भालने के लिए दो हाथ भी काफ़ी नहीं होते।

और तुम्हारे हज़ार सिर और आठ हाथ हैं। जुकाम यदि हो गया तो क्या करोगी?" देवी का क्रोध जाता रहा। वह हँसी।

"यदि इस पात्र का दूध तुमने पिया तो तुम्हें सब विद्यायें मिलेंगी। यदि दही पी तो सर्व सम्पदा मिलेगी। तुम जो चाहो ले लो।"

मां, मैं मनुष्य हूं। पिया नहीं है। क्या
ाहिए, यह जानने के लिए यदि वे दोनों पात्र
रे हाथ में दिये तो..."

हते हुए उसने देवी के हाथ से दोनों पात्र
लिये। दोनों एक साथ पी गया। देवी ने
सकर शाप दिया—"तुम विकट कवि होगे।"

मकृष्ण ने निवेदन किया—"तुम मां हो।
तुम्हारा लड़का हूं। इसलिए मैं गलती
रूंगा और तुम क्षमा करोगी।"

देवी शान्त हुई। "तुम विकट कवि तो होगे ही,
परन्तु तुम्हें राजाओं का आश्रय मिलेगा, कीर्ति
और धन पाओगे।" उसने आशीर्वाद दिया।

तेनाली रामकृष्ण कहीं जाकर आ रहा था। रास्ते में उसने पूछा—"क्या हाल है? क्यों रामु अमर कोश की खबर लेते मालूम होते हो।"

राम को गुस्सा आ गया। "ओह, आप अपने को ही पंडित समझते हैं। मैं भी पंडित हूं। सब अभी पढ़ लेता हूं।"

"नहीं भाई, ताड़ के पत्तों के ढेर को सिर पर रख यों चिल्लाओगे तो मालपुए, मठरी सब हजम हो जायेंगे और फिर भूख लगेगी।"

"कल रायजी मुझे सोने का आम जो देंगे, तब मैं उन्हें खरीद लूंगा। जानना चाहते हो क्यों देंगे? मैं नहीं बताऊंगा। जाओ।"

राजपथ में शम्भु शास्त्री ने पूछा—"कविजी, कोई ऐसा उपाय बताइये कि पेट बढ़ जाये।" "पेट बढ़ गया तो कोई शादी नहीं करेगा।"

"कल रायलु जी ब्राह्मणों को सोने का आम दे रहे हैं। पेट ठीक न रहा तो अच्छा न होगा।"

…बसामी पेद्दा जी के घर जाते ही रामकृष्ण ने यह पूछा। पेद्दा ने बताया—"हाँ रामकृष्ण, …ल उनकी माँ नागाम्बः का श्राद्ध है। उनको आम पसन्द थे। इसलिए ब्राह्मणों को सोने … आम दे रहे हैं।"

…र वहीं राजगुरु ताताचार्य थे। उन्होंने …हा—"भाई रामकृष्ण, तुम्हें कुछ ऐसा करना …ना कि यह सब न हो।"
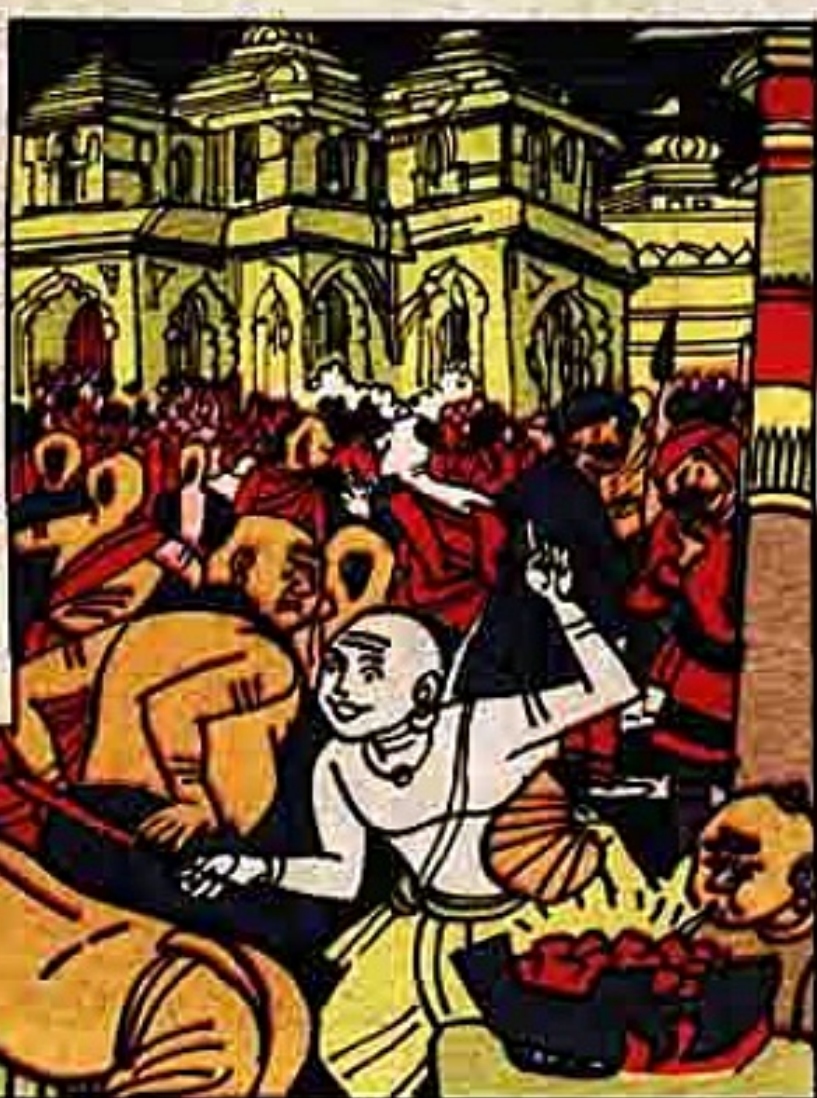
…गले दिन किले की ड्योढ़ी पर शोर हो रहा था। तेनाली रामकृष्ण ने कहा कि जो कोई सोने का …म पाना चाहे उसको पहिले जलते लोहे से अपने को दगवाना होगा। जो जितनी बार दगवायेगा,

राजमहल में ब्राह्मण पंक्ति बार आ रहे थे। सुवर्ण फलों को लेकर वे कृष्णदेवराय को आशीर्वाद देकर जा रहे थे। भोंदू रामू फल लेने गया। उसने कहा—"मुझे तीन फल देने होंगे। मैंने तीन बार जो दगवाया है।"

राय को बहुत गुस्सा आया। उसने सैनिक को आज्ञा दी—"तुरत रामकृष्ण कवि को दरबार में उपस्थित करो।"

राय ने पूछा—"दगवाना! क्या बात है! किसने दाग लगाये हैं!" वहां उपस्थित लोग चिल्लाये—"तेनाली रामकृष्ण।"

"श्रीमन्महाराज, राजपरमेश्वर, उपाधि युत... श्री कृष्णदेवराय विजयी हों" आशीर्वाद देता रामकृष्ण आया।

"ब्राह्मणों को क्यों जलती लोहे की छड़ियों से दाग लगाये जा रहे हैं?" रामचन्द्र ने गुस्से में रामकृष्ण से पूछा।

रामकृष्ण इस प्रश्न से घबराया नहीं। उसने कहा—"मेरी माँ को गठिया था, रोती रही पर किसी ने लोहे से दागा नहीं।"

आज ही उनकी बरसी है। इसलिए उनकी आत्म शान्ति के लिए ब्राह्मणों को लोहे की छड़ों से दगवा रहा हूं।" रामकृष्ण ने कहा।

धन को यों व्यर्थ नहीं करना चाहिए, यह दिखाने के लिए रामकृष्ण ने यह कहा था। राजा ने उसकी प्रशंसा की।

दाढ़ी में तिनका

एक दिन किसी ने अकबर बादशाह के सोने के कमरे में रखी आलमारी में से एक बहुमूल्य गहना चुरा लिया। यह कैसे मालूम किया जाये कि वहाँ काम करनेवाले नौकरों में कौन चोर था! अकबर ने चोर पकड़ने का काम बीरबल को सौंपा। बीरबल उस आलमारी के पास गया जिसमें से गहना चुराया गया था, उसमें उसने सिर रखा और ऐसा दिखाया, जैसे कुछ सुन रहा हो, फिर उसने अकबर की ओर मुड़कर कहा—"इस आलमारी ने एक ऐसा तरीका बताया है, जिससे चोर को पकड़ा जा सकता है। उसके चोर की दाढ़ी में कोई तिनका है।"

बीरबल के यह कहते ही वहाँ खड़े नौकरों में से एक ने दाढ़ी संवारी। बीरबल ने जब उससे पूछ ताछ की तो वह डर-डरा गया और उसने चोरी किया हुआ गहना लाकर दे दिया।

गरीब जीवन

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह फिर एक बार पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल हमेशा की तरह श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम तो भोग विलास के आदी हो, इस नीच काम को कैसे कर रहे हो, मुझे सचमुच समझ में नहीं आ रहा है। हेमाम्बिका ने विनयगुप्त को कितना ही प्रेम किया था। क्योंकि जिस घर में वह रहने जा रही थी, उसको बिल्कुल पसन्द न था, इसलिए वह अपना प्रेम ही खो बैठी। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, उन दोनों की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

वलभी नगर में, जो व्यापार के लिए लिए प्रसिद्ध था, धनगुप्त नाम का एक वैश्य रहा करता था। वह होने को तो

बेताल कथाएँ

अमीर था, पर आय से अधिक खर्च करने के कारण अपनी सम्पत्ति धीमे धीमे करके खो रहा था। भले ही भविष्य में कुछ भी हो, उसकी पत्नी और बच्चों ने हर तरह के भोग-विलासों का आनन्द लिया।

जब धनगुप्त की लड़की हेमाम्बिका सयानी हुई तो उनकी बहुत-सी सम्पत्ति समाप्त हो चुकी थी। इसलिए उससे विवाह करने के लिए बड़े घरानों से कोई भी न आया। परन्तु कुछ दिनों बाद सौभाग्य से उसका प्रेमपात्र विनयगुप्त, जो नवयुवक था, वर के रूप में मिला।

यह विनयगुप्त न केवल सुन्दर ही था, परन्तु मान-मर्यादा से भी परिचित था। शिक्षित और सुसंस्कृत था, कहाँ कैसे व्यवहार करना चाहिए था, जानता था। वैसा व्यक्ति किसी भी राजदरबार के लिए आभूषण हो सकता था।

परन्तु विनयगुप्त बड़े वंश का न था। गरीब घराने में पैदा हुआ था। गरीबी का अनुभव करते हुए अपनी शक्ति के कारण मेहनत करता वल्भी नगर के व्यापारियों के यहाँ काम करता अपना जीवन काट रहा था।

हेमा विनय से विवाह करने के लिए मान गई थी, पर वह विवाह उसके माँ-बाप को उतना पसन्द न था। उन्होंने माना कि विनय सुन्दर था, बुद्धिमान था, तरक्की कर सकता था पर उनका कहना था कि अच्छा होता यदि हेमा किसी बड़े घर में ब्याही जाती। धनगुप्त ने अपनी बेटी के लिए कई बड़े घरों में सम्बन्ध खोजे। पर वे सब हेमा को पसन्द न आये। जो आकर्षण विनय में था उसका सौवाँ हिस्सा भी उनमें उसको न दिखाई दिया। विनय की योग्यतावाले वरों को बड़े घरों में ढूँढ़ना

धनगुप्त के बस की बात न थी। हेमा क्योंकि विनय को बहुत चाह रही थी, इसलिए उसके माँ-बाप ने इस विवाह के लिए अनुमति दे दी।

हेमा और विनय की सगाई हुई। विवाह का मुहूर्त भी निश्चित कर दिया गया। विनय ने हेमा से कहा—"यह मेरा सौभाग्य है कि तुम्हारे लोगों ने मुझ से विवाह करने के लिए तुम्हें अनुमति दे दी है। लगता है, तुम्हारे साथ मेरा भी भाग्य खिलेगा। हम जहाँ रहने जा रहे हैं, उस घर को तुमने अभी तक देखा भी नहीं है। अगर तुमने आकर पहिले ही देख लिया, और अगर कुछ तबदीलियाँ करनी होंगी तो गृहप्रवेश से पहिले ही जो तुम चाहोगी वह कर दिया जायेगा।"

अगले दिन हेमा ने पाल्की मंगवायी, अपनी रेशमी साड़ियों में से सब से अच्छी साड़ी पहिनी। विनय के बताये हुए पते को कहारों को बताया। पाल्की में बैठकर वह उस घर की ओर गई। पाल्की बड़ी सड़क से होती हुई छोटी सड़क पर गई, फिर गलियों में से होती हुई आगे चली। बड़े बड़े मकान आने खतम हो गये।

छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ और कूड़े के ढेर आने लगे। "यह क्या, विनय के घर की ओर जाने का रास्ता इतना खराब है!" हेमा को मन ही मन आश्चर्य हुआ।

आखिर पालकी कूड़ा कर्कट के पास एक खपरैल के मकान के सामने रुकी। हेमा पालकी से उतरी और उसने उस घर की ओर आश्चर्य से देखा। मिट्टी की दीवारें थीं। कहीं कहीं गोबर का पलस्तर गिर भी गया था।

विनय बाहर आया। हँसते हुए उसने कहा—"यही हमारा घर है। अन्दर आकर देखो। देखने के लिए बहुत समय नहीं लगेगा।"

अन्दर जाने का रास्ता बहुत तंग था। हेमा अन्दर पैर रख रही थी कि पैर में एक झाड़ू लगी। वह झुंझलाकर जब एक ओर हटी तो दीवार से टकराई, साड़ी के एक छोर पर दाग लग गया। चमचमाती जरी पर वह दाग बड़ा बुरा लगा। हेमा ने रोनी-सी शक्ल बना ली।

विनय ने इस सब की परवाह न की। उसने देखा तक न। वह आगे चलता गया और हेमा के लिए रास्ता बनाता

"घर ठीक करनेवाले अभी अभी आये हैं, उनसे बातें करके अभी-अभी आता हूँ, इस बीच, तुम यहाँ कुर्सी पर बैठो और घर के लिए क्या-क्या चाहिए, सोचो। थोड़े खर्च से ही हम इस घर को अच्छा कर लेंगे।" हेमा से कहकर विनय बाहर चला गया।

हेमा के लिए यह सब एक सपने की तरह था। कुर्सी पर बैठी तो उसके हाथ पर धूल लगी। वह झट उठी, उठकर देखा तो उसकी साड़ी पर धूल लग गई थी, "छी छी, क्या मनहूस घर है, जहाँ देखो, वहाँ धूल, धुँआ, जाले" कुढ़कर, रोती हुई अपने आँचल से आँसू पोंछ लिये। उसकी आँखें और कान भी धूल के कारण काले हो गये। उसका दुख और बढ़ गया।

वह इस दुख में थी कि विनय वापिस आया—"क्यों, क्या हो गया, रो रही हो?" उसने हेमा से प्रेमपूर्वक पूछा।

"छी, मेरे शरीर पर धूल लग गई है। हाथ पर धूल है, मुँह पर धूल है। सोने की सी रेशमी साड़ी सब खराब हो गई है। मैं यहाँ एक क्षण नहीं रहूँगी। अभी चली जाऊँगी।" हेमा ने रोते हुए कहा।

गया। "बगलवाली रसोई है। इस तरफ़ सोने का कमरा है। पीछे बराण्डा है फिर समान आदि रखने की जगह" विनय ने यह सब जानकारी दी।

हेमा ने तो उतने गरीब घर में रहना तो अलग, कभी पैर भी न रखा था। छत पर धुँआ जमा हुआ था, जाले लटक रहे थे। दीवारों पर धूल जमी हुई थी। सारे घर में मिट्टी का फर्श था।

सोने का कमरा भी और कमरों से अधिक साफ़ न था। उस कमरे में एक पुरानी कुर्सी थी।

"अरे, क्या इसलिए रो रही हो कि साड़ी खराब हो गई है? क्या इसे तुमने राजमहल समझा था? विवाह के बाद यह तुम्हारा ही तो काम है कि घर साफ़ करवाओ, जाले निकलवाओ। धूल देखकर क्यों घबराती हो?" विनय ने कहा।

"मेरी सोने की-सी साड़ी खराब हो गई। सारे शरीर पर धूल ही धूल है। घर जाकर जब तक अच्छी तरह नहा धो न लूँगी, तब तक यह मिट्टी जायेगी नहीं।" विनय की बातें सुने बिना ही हेमा ने कहा।

विनय में बहुत-सा परिवर्तन हुआ। उसने गम्भीर होकर कहा—"हेमा, माफ़ करो, तुझे मैंने यहाँ बुलाकर गलती की। इस तरह की जगह पर तुम एक क्षण नहीं रह सकती, फिर घरबार कैसे बसाओगी?"

हेमा पालकी पर सवार होकर अपने घर चली गई। विनय फिर उसको देखने नहीं गया। उसने धनदत्त के पास खबर भिजवाई कि वह हेमा से विवाह करने लायक न था, इसलिए विवाह की तैयारियाँ न की जायें।

हेमा के माँ बाप तनिक भी यह सोचकर दुखी न हुए कि हेमा का यह सम्बन्ध टूट

गया था। उन्होंने सोचा क्योंकि उनकी लड़की का भाग्य अच्छा था, इसलिए ही ऐसा हुआ। हेमा ने सोचा कि विनय ने सचमुच उससे प्यार न किया था, इसलिए ही वह रुठकर शादी करने से इनकार कर रहा था।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, यह बताओ! विनय ने हेमा से प्रेम करना क्यों छोड़ दिया था? कम से कम यह दिखावा तो करता कि वह उससे प्रेम करता था, जब वह दुखी थी, कम से कम उसको आश्वासन तो देता। उसको उसने यूँ ही भेज दिया, जब यही बात थी तो उसने पहिले उससे प्रेम ही क्यों किया? इन प्रश्नों का अगर तुमने जान-बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा—"यह कहने में बिल्कुल सन्देह नहीं है कि विनय को हेमा पर प्रेम था। हेमा भी विनय को प्रेम करती थी—उसकी गरीबी, बिना स्वयं देखे ही, वह जान गई थी। उसका विनय के घर जाना, उसके प्रेम की परीक्षा थी, पर विनय के प्रेम की नहीं। जो उसकी गरीबी को थोड़ी देर न सह सकी थी, क्या वह हमेशा उसके साथ गृहस्थ निभाती? अगर उसने हठ करके उस गरीबी को अपना भी लिया तो वह उसके लिए एक प्रकार का त्याग ही होगा। इसलिए यदि उसने यह न चाहा कि इतना त्याग करे इसका कारण विनय का उसपर प्रेम ही हो सकता है।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

हज़ार साल पहिले हान्ग चौ नगर में एक प्रसिद्ध डाकू रहा करता था। कोई नहीं जानता था कि उसका असली नाम क्या था और उसकी शक्ल सूरत क्या थी। यद्यपि उसने कई घरों में चोरी की थी पर किसी ने उसको देखा न था। जिस घर में वह चोरी करने जाता, उस घर की अन्दर की दीवार पर वह लिख आता—"यह देखो आया।" इसलिए उसे हर कोई "यह देखो आया।" कहा करता।

होते-होते "यह देखो आया" के कारनामे असह्य हो उठे। लोगों ने सरकार से निवेदन किया कि उनकी उससे रक्षा की जाये। नगर के कोतवाल ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे नगर छान ढूंनकर "यह देखो आया" को पकड़ें। उसने उस चोर को पकड़ने के लिए एक अवधि भी निश्चित की। सैनिक अच्छी आफ़त में फंसे। डाकू बड़ा चालाक था। कोई भी ऐसा न था, जो यह बता सके, वह कैसा था, कहाँ रहा करता था आदि। फिर उसको निश्चित समय में पकड़ लेना आसान न था, यदि किसी काम को जी तोड़कर किया जाये, तो कुछ भी असम्भव नहीं है। सैनिकों ने एक आदमी को न्यायाधिकारी के पास ले जाकर कहा—"हुज़ूर, यह है "यह देखो आया" है। इसको सज़ा दीजिये।"

"इसी को डाकू बताने के लिए क्या गवाही है?" न्यायाधिकारी ने पूछा।

"हमने इसे बहुत दौड़ धूप के बाद पकड़ा है। आप हम पर विश्वास कीजिये।" सैनिकों ने कहा।

सुखदेव

"हुज़ूर, उन्होंने अपनी जिम्मेवारी पूरी करने के लिए किसी को भी पकड़ लाने की सोची। दुर्भाग्य से मैं इनको मिल गया। मैं चोर नहीं हूँ।" गिरफ्तार किये गये आदमी ने कहा।

न्यायाधिकारी को सन्देह करता देख कोतवाल ने कहा—"इसकी बातें सुनकर कहीं आप इसे छोड़ न देना। यह ही असली चोर है। अगर आपने इसे छोड़ दिया, तो यह फिर न मिलेगा।"

कोतवाल के इतने जोर देकर कहने पर न्यायाधिकारी ने कहा—"अच्छा, तो खैर फिलहाल इसे जेल में रखो। मुकदमा होने पर सब सच मालूम हो जायेगा।"

जो गिरफ़्तार किया गया था, वह सचमुच चोर था। जेल में पैर रखते ही उसने जेल के अधिकारी से विनयपूर्वक कहा—"हुज़ूर, नये कैदियों का आपके पास खाली हाथ आना ठीक नहीं है। परन्तु क्या करूँ! जब सैनिकों ने मुझे पकड़ा तो जो कुछ मेरे पास था, मुझे मार पीटकर खोंस लिया। अगर अपको आपत्ति न हो, तो पहाड़ के मन्दिर के पास जाकर वहाँ ईंटो के नीचे जो मैंने चान्दी छुपा रखी है आप जाकर ले लीजिये।"

अधिकारी ने इन बातों का विश्वास न किया। परन्तु जब उसने वहाँ जाकर देखा तो वहाँ सेर भर चान्दी थी। उसके बाद उसने कैदी की अच्छी तरह देख भाल की।

थोड़े दिनों बाद कैदी ने जेल के अधिकारी से कहा—"पुल के नीचे भी मैंने थोड़ा धन छुपा रखा है। वह भी ले आइये।"

"पुल पर तो हमेशा लोग आते जाते रहते हैं।" जेल के अधिकारी ने कहा।

"यह दिखाते हुए कि नदी में कपड़े धोने जा रहे हैं, टोकरा ले जाइये। पैसा लेकर टोकरे में डाल लीजिये, उस पर कपड़े डाल दीजिये। किसी को भी कुछ न मालूम हो सकेगा।" उसने कहा।

अधिकारी ने वैसा ही किया, और पाँच सेर चान्दी ले आया, फिर उन दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई। उस दिन रात को अधिकारी कैदी के साथ पीने के लिए शराब भी ले आया।

"देखो भाई। आज रात को जरा मैं घर हो आऊँगा, कल सवेरे मैं वापिस आ जाऊँगा। डरो न कि मैं भाग जाऊँगा। भागने का तो मतलब यही न हुआ कि मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। फिर भागने का मतलब भी क्या है? कभी न कभी न्यायाधिकारी को मुझे छोड़ना ही पड़ेगा। मैं निर्दोष जो हूँ।" कैदी ने कहा।

कैदी को यों जाने देना अधिकारी जानता था आपत्तिजनक था। पर अधिकारी से न न कहते बना। कैदी बाहर गया तो फाटक से न गया, छत पर चढ़कर चला गया।

अगले दिन सवेरे, छत पर से उतरकर आया। जेल के अधिकारी को, जो अभी सो रहा था, उठाकर उसने कहा—"यह देखो आया।" "यह देखो आया।"

"अच्छा, तो तुमने अपना वचन निभाया।" अधिकारी ने सन्तुष्ट होकर कहा।

"अरे वाह, नहीं तो तुम्हारा अपमान न होता! मैं तुम्हारा उपकार कभी न भूलूँगा। मैं अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए आपके घर एक उपहार भी डाल आया हूँ। जाकर ले आओ। मैं यहाँ अधिक समय न रहूँगा।" कैदी ने कहा।

जेल का अधिकारी घर गया।

"मैं आपके पास खबर भिजवाने जा रही थी कि आप ही आ गये। मालूम है, आज सवेरे क्या हुआ? घर में छत पर कुछ आहट हुई। इतने में यह पोटली कमरे में दिखाई दी। खोलकर देखती हूँ कि इसमें सोने और चान्दी की तश्तरियाँ हैं।" जेल के अधिकारी की पत्नी ने कहा।

अधिकारी समझ गया कि वह कैदी का उपहार था। "कहो मत, तेरा भला होगा। उन्हें सम्भालकर रखो। फिर उन्हें बेच बाचकर पैसे बना लेंगे।"

उन दिन जो लोग कचहरी में आये, उनमें से छः सात ने कहा कि पिछली रात "देखो, मैं आया" घरों में घुसा और चोरी कर कराकर चला गया। उस चोर को पकड़ने के लिए न्यायाधिकारी से कहा।

"मैंने, तभी सन्देह किया था, सैनिकों ने किसी और को पकड़ लिया था। असली चोर तो अब भी उत्पात मचा रहा है।" न्यायाधिकारी ने सोचा। यह सोच कि किसी निर्दोष के साथ अन्याय हुआ था, उसने जेल के अधिकारी के पास तुरत आज्ञा भिजवाई कि उस कैदी को छोड़ दिया जाये। फिर उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि निश्चित अवधि में "यह देखो आया" पकड़ा जाये।

डाकू कैद में गया और निकलकर भाग गया। वह जो भाग गया था, वह ही असली चोर था। यह केवल जेल का अधिकारी ही जान सका। पर चूँकि उसने चोर का माल ले रखा था, इसलिए वह चुपचाप मुख पर ताला लगाये बैठा रहा।

मैंने नहीं किया, वह आलसी है। इसलिए रो रहा है।

“आलसी है तो रो क्यों रहा है ?”

“चींटियों के बिल पर जो बैठा है, चींटियाँ काट रही हैं और वह उठने के लिए अलसा रहा है।

डाक्टर साहब—जब कभी मैं अपनी पत्नी को देखता हूं तो मेरी आँखों के सामने दाग दीखने लगते हैं। क्या आँखों में कोई बीमारी है ?

“वाह—तुम चीता जो हो, दाग न दीखेंगे तो...”

नहीं, मेरी पत्नी तो शेरनी है।

यह लड़की एक पैर उठाकर क्यों नाच रही है ?

“अगर दोनों पैर उठाकर नाचेगी तो गिर जो जायेगी।”

सुनो जब तक तुम राजहंस बनोगी, तब तक मैं भी सोने की अंडे दूंगी। समझी।

न्याय-निर्णय

एक गाँव में तीन भाई रहा करते थे। सम्पत्ति के बंटवारे में वे एक खेत के बारे में असहमत रहे। तीनों ने कहा कि यह भूमि मुझको मिलनी चाहिये। क्योंकि उस भूमि पर तीनों का समान अधिकार था, किसी के लिए ठीक फैसला देना सम्भव न था। आखिर तीनों भाइयों ने एक न्यायाधिपति से बीच बटाँव करने के लिए कहा। तीनों की बात सुनकर, न्यायाधिपति ने उन से कहा—"कल मैं इस बारे में सोचूँगा और परसों फैसला दूँगा।

न्यायाधिपति ने कहने को तो यह कह दिया, परन्तु उसे न सूझा कि किसके पक्ष में फैसला दे। ऐसा लगा कि उस भूमि पर तीनों का बराबर हक था। पर चूँकि न्यायाधिपति को कुछ न कुछ तो न्याय करना ही था, इसलिए सूझ बूझ की परीक्षा करके उसने फैसला देने का निश्चय किया।

अवधि के समाप्त होने से पहिले तीनों भाई न्यायाधिपति के पास आये।

"कानूनी तौर पर आपके जो हक इस भूमि पर हैं, उनको मैंने गौर से जाँचा। परन्तु फैसला करने से पहिले मैं आपके बारे में कुछ जानकारी चाहता हूँ। इसलिए मैं कुछ प्रश्न करूँगा। आप उनका उत्तर दीजिये। तुम तीनों आलसी माळूम होते हो। परन्तु आपमें से कौन अधिक आलसी है?

तीनों ने कहा कि "मैं हूँ।"

"अगर मैं रास्ते में लेट गया और उस तरफ़ से पशुओं का झुण्ड भी आया, तो उनके पैरों के नीचे पिस जाऊँगा, पर उठूँगा नहीं। मैं उतना आलसी हूँ। बड़े

कोमलेश

ने कहा। "जिस घर में मैं हूँ, अगर उसमें आग भी लग गई, तो मैं न उठूँगा।" दूसरे ने कहा। "अगर ऊपर से धूल और जाल भी आखों में गिरे, तो मैं आँखें मूँद नहीं पाता हूँ। मैं उतना आलसी हूँ।" तीसरे ने कहा।

"कोई भी किसी से कम नहीं मालूम होता। तुम में उम्र में सब से कौन बड़ा है।" न्यायाधिपति ने पूछा। तीनों ने कहा—"मैं हूँ। मैं हूँ।"

"मुझे वे दिन याद हैं, जब बिल्लियाँ पैरों के आगे आतीं और लोग उनको लात न मारते।" बड़े ने कहा। "मुझे वे दिन याद हैं, जब स्त्रियाँ एक दूसरे को बुरा भला न कहती थीं।" दूसरे ने कहा। "जब दस आदमियों में एक सच बोलनेवाला होता था, वे दिन मैं जानता हूँ।" तीसरे ने कहा।

"तो तुममें कौन बड़ा है, यह कहना बड़ा मुश्किल है। देखें, तुममें किसकी नजर तेज है?" न्यायाधिपति ने कहा।

"अगर दस मील की दूरी के पहाड़ पर बैठा पक्षी आँखें मींचे, तो मैं वह जान जाता हूँ।" बड़े ने कहा। "मैं यह बता सकता हूँ कि उसने आँखें क्यों मींची हैं? इसलिए कि उसकी आँखों में कोई तिनका पड़ा है, या यूँ ही?" दूसरे ने कहा।

"मैं यहाँ तक बता सकता हूँ कि उसकी आँख में पड़ा तिनका क्या है? कैसा है?" तीसरे ने कहा।

"तुम तीनों ही खूब हो। एक और बात पूछता हूँ। देखें, तुम में कौन सब से अधिक चुस्त है।" न्यायाधिकारी ने पूछा।

"मैं हूँ। एक खेत में एक शिकारी कुत्ता और हज़ार खरगोशों को रखकर मुझे छोड़िये। मैं एक पैर पर चलूँगा और

एक खरगोश भी खेत से बाहर न जा सकेगा।" बड़े ने कहा।

"यह भी कोई बात हुई? पहाड़ पर किला देखा है? उस पर छत नहीं है। उसमें खिड़कियाँ नहीं हैं। हमेशा वहाँ तूफ़ान-सा उमड़ा रहता है। उस किले में रुई की पूनियाँ डाल दीजिये उसमें से एक भी बाहर न जा सकेगी।" दूसरे ने कहा।

"मैं भागते हुए घोड़े के पैरों में नाले लगा सकता हूँ।" तीसरे ने कहा।

"एक और बात बताइये। तुम तीनों में कौन सबसे अधिक अक़्लमन्द है?" न्यायाधिकारी ने पूछा।

"मेरी अक़्ल बड़ी कमाल की है। आप किसे के बालों का रंग बता दीजिए। मैं उसके लिए कुड़ता इस तरह सी दूँगा, जैसे उसका माप लेकर सिया हो।" बड़े ने कहा।

"मैं कुड़ता इस तरह सी दूँगा, जैसे माप लिया हो। मुझे बालों का रंग भी बताने की ज़रूरत नहीं है। मेरे लिए यह काफ़ी है कि मैं उसका खाँसना सुन लूँ।" दूसरे ने कहा।

न्यायाधिपति ने तीसरे की ओर मुड़कर पूछा—"और तुम्हारी बात क्या है?"

"मेरी सूझ बूझ! जब कोई मुकद्दमा ऐसा आ जाये, जिसका कोई फ़ैसला न दिया जा सके, मैं मर जाऊँगा पर किसी को यह न जानने दूँगा कि मैं फ़ैसला नहीं दे पा रहा हूँ।" तीसरे ने कहा।

तुरत न्यायाधिकारी ने खंखार कर कहा—"मैंने तुम्हारे मुकद्दमे को हर तरह से जाँचा सोचा और मेरा यह निर्णय है कि भूमि तीसरे भाई की है। इसलिए मैं यही फ़ैसला देता हूँ।"

गोहा के मालपुये

कैरो नगर में गोहा नाम का एक प्रसिद्ध हास्यकार हुआ करता था। उसने एक दिन मालपुये खाने चाहे। पड़ोस के घर जाकर उसने कड़ाई मांगी, पड़ोसीने कड़ाई लाकर दी।

गोहा ने मालपुये पकाकर पेट भर खाये। फिर उस कड़ाई में एक छोटा-सा मालपुआ रखकर पड़ोस के घरवाले को उसे देते हुए उसने कहा—"देखिये आपकी कड़ाई ने बच्चे दिये हैं।"

पड़ोसी को लालच हुआ। उसने इस उद्देश्य से गोहा को फिर कड़ाई उधार दी कि कुछ और मिलेगा। मगर इस बार वह फिर वापिस न आई, पड़ोसी ने जब जाकर कड़ाई मांगी तो गोहा ने कहा—"तुम्हारी कड़ाई मर गई है। जो चीज़ पैदा होती है, वह

दीप की आत्मकथा

हमारा सूर्यवंश है। अग्नि हमारा आराध्य देव है। हमारी सहायता से ही अन्धकार युग के मानव आगे बढ़े। हमें देखकर अन्धकार चला जाता है। मैं दीप हूँ।

हमारे कुलदेव अग्नि को सर्व भक्षक की उपाधि मिली हुई है। परन्तु हम कुछ ईन्धनों को ही पचा पाते हैं। ईन्धन चाहे कुछ भी हो, यदि उसमें सूर्य की शक्ति पहुँच गई हो, तभी वह हमारे काम में आ सकता है।

आदिकाल के पुरुष हम से अपरिचित थे। हम से जो कुछ काम हो सकते थे, उसके लिए वे अग्नि का आश्रय लिया करते। यह देख कि इस कारण, उसका उपयोग सीमित था, अग्निदेव ने ही हमें उपहार में दिया।

उस समय के मनुष्य हमें अपने साथ मशाल के रूप में ले गये। उन्होंने इस तरह अन्धकार पर विजय पाई। अपने कार्य-काल को बढ़ाया। अपने जीवन को विस्तृत किया। हमारे उपकार के बदले में उन्होंने हमें कृतज्ञता दी, आदर दिया। भक्ति से पूजा। हमें ज्ञान और विकास का चिन्ह समझा। हमारी सहायता से मनुष्योंने न केवल अन्धकार को ही दूर किया, परन्तु वे अग्नि भी जब चाहे तब बनाने लगे। उससे पहिले हमेशा उनको आग बनाये

रखनी पड़ती थी। हमें अग्नि की अपेक्षा कम ईन्धन की आवश्यकता है। हम कम गरमी पैदा करते हैं और अधिक प्रकाश देते हैं। इसलिए हमेशा आग जलाये रखने की अपेक्षा हमेशा दीप जलाये रखना मनुष्यों के लिए अधिक आसान है न! हम मनुष्यों के लिए किस किस तरह उपयोगी सिद्ध हुए यह कहना आसान नहीं है। अन्धकार में जो जन्तु देखे नहीं जा सकते थे मनुष्य हमारी सहायता से देखने लगे। उनका शिकार करने लगे। उन क्रूर जन्तुओं को जो रात में विचरा करते थे, वे हमारी सहायता से डराने लगे।

मनुष्य और जीवन के साथ-साथ हम में भी परिवर्तन आये। पहिले हम मशाल के रूप में थे। धागा आदि को तेल में डुबोकर, किसी लाठी में लपेट कर जला लिया करते थे। उसके बाद लकड़ी की जगह काँसे की मशालें आईं। मशालों का घर आदि में उपयोग नहीं हो सकता था। क्योंकि अभी इसमें अग्नि अंश अधिक था। जब हम गृहदीप के रूप में आये, तब हमारा सौन्दर्य बढ़ा। उन मिट्टी के दीपों में, जब तेल डालकर, बत्ती रखकर हमें जलाते, तो हम बहुत ही आकर्षक दीख पड़ते। हमें देखकर उस समय के लोग, विशेषकर स्त्रियाँ

इतनी खुश होतीं कि अक्सर सुन्दर लोगों को देखकर कहा करतीं—"क्या सौन्दर्य है, तोड़कर दीप जलाया जा सकता है।" हम मनुष्यों की नज़र में सुन्दर ही नहीं, ठंडे भी मालूम होते—इसलिए शिखा पर हाथ रखकर, वे आँखें सेका करते। इस तरह वे हमारे प्रति भक्ति तो दिखाते ही अपनी आँखों को ठंडक भी देते।

गृहदीपों के आ जाने के बाद हमारे लिए कैसे कैसे सुन्दर दीप वगैरह तैयार किये गये, आप अनुमान भी नहीं कर सकते। यद्यपि गरीब मिट्टी के दीपों से ही तसल्ली कर लेते थे परन्तु धनी काँसे से हमारे लिए स्तम्भ वगैरह बनवाते। ऐसे भी दीप बनवाये जाते थे, जिनमें एक साथ चार-पाँच बत्तियाँ रखी जा सकती थीं। पुराने ज़माने में चौबीस शताब्दी पहिले रोम देश में कितने ही सुन्दर पात्रों के चीनी मिट्टी के पात्रों का दीये के रूप में उपयोग होता था। उनपर तरह तरह के दृश्य चित्रित किये जाते थे। उनको पकड़ कर ले जाने के लिए, दोनों तरफ़ मुठिया लगाई जाती थीं।

हम से उन दिनों घड़ियों का काम भी लिया जाता था। एथेन्स में एकापलिस का मन्दिर था। उसमें सोने से बना दीप हमेशा

प्रकाश करता रहता। जब पात्र में तेल डाल दिया जाता, तो वह अखंड शिखा वर्ष-भर जलती रहती। वे साल में एक ही बार दीप भरा करते। इस तरह उस दीप के तेल के परिमाण से वे समय की गणना कर लेते थे।

उस समय के रोमवासियों ने हमें आसानी से लालटेन भी बना लिया। लालटेन उन्होंने कांसे से तैयार की, ताकि अन्दर की बत्ती बुझ-बुझा न जाये, हमारी चारों ओर से रक्षा की गई। उसे ऊपर से पकड़ने का भी उन्होंने प्रबन्ध किया ताकि उसको वे जहां चाहें, ले जा सकें। लालटेनों के आविष्कार के बाद कई शताब्दियों तक, मनुष्यों ने उनपर अपनी कला का प्रदर्शन किया। मुख्य तौर पर चीन और जापान के लोगों ने लालटेन बनाने को कला समझा। लालटेन के प्रकाश को बढ़ाने के लिए बर्नर, शीशे की चिमनियां, प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने के लिए शीशे की सी परतें भी तैयार की गईं।

* * *

हमारे ईन्धन में भी कई परिवर्तन हुए पहिले एरन्ड का तेल, फिर तिल का तेल और भी कितने प्रकार के तेल और चरबियां उपयुक्त हुईं। उसके बाद मिट्टी का तेल आया। लालटेन के अविष्कार के बाद,

मिट्टी का तेल अच्छा ईन्धन तो कहलाया, पर सच कहा जाये तो वह और तेलों के सामान अच्छा नहीं है। चरबी, मोम आदि कठिन ईन्धन हैं। मोम की बत्तियाँ कहीं भी ले जायी जा सकती हैं। तेल की तरह उनको पात्रों की आवश्यकता नहीं है। इसके बाद वायु का ईन्धन आया। मिट्टी के तेल को वायु के रूप में बदला गया—उससे यदि गैस लाइट वगैरह जलाई गई, तो अच्छी रोशनी होती है।

उसके बाद सबसे अधिक विचित्र ईन्धन आया। यह है विद्युच्छक्ति। बिजली की बत्तियाँ अब सबसे अधिक बढ़ चढ़कर हैं। इनमें कितने ही कुल हैं। फिलमेन्ट दीप, ट्यूब दीप, आर्कलाइट कितनी ही तरह के।

प्रकाश है तो बिजली का प्रकाश है। इनमें कई ऐसे हैं, जिनके प्रकाश से आँखें चौंधिया जाती हैं। कई ऐसे भी हैं, जैसे प्रकाश स्तम्भ में, जो अनेक मीलों तक सर्च लाईट के रूप में प्रकाश पहुँचाते हैं। स्टूडियों में फिल्म बनाने के लिए और सिनामाओं में फिल्म दिखाने के लिए बहुत ही ताकत वाली बत्तियों का उपयोग होता है।

हम में कुछ क्षणिक दीप भी हैं। जैसे टोर्च लाइट। वह तभी जलाई जाती है, जब ज़रूरत होती है। सिगरेट जलाने

वाला लाइटर तो देखा होगा, वह भी एक प्रकार का क्षणिक दीप है। ऐसी ही फ्लेश लाइट हैं, जिनकी मदद से फोटोग्राफ लिये जाते हैं। मनुष्यों में जितने वर्ग हैं, अब आप हम में भी उतने वर्ग हैं।

*   *   *

हमारे और आपके सम्बन्ध में, जो शुरु से चला आ रहा है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हमें देखते ही आपका मन प्रफुलित हो उठता है। जब आप संतुष्ट होते हैं, तब हमें जलाकर दीपोत्सव करते हैं।

कितने ही देशों में दीपोत्सव प्रति वर्ष होते हैं। इस देश में दीवाली एक ऐसा ही त्यौहार है। चीन में नव वर्ष के बाद के पूर्णिमा की रात को दीपोत्सव मनाया जाता है। इस देश में भी कई प्रान्तों में कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपोत्सव मनाया जाता है।

पाँचवी सदी में ईसा के पूर्व के रोम के हिरोडटस नाम का प्रसिद्ध इतिहासकार मिश्र के समास नामक स्थल पर एक दीपोत्सव देखकर चकित रह गया। शायद रोमवासी दीपोत्सव नहीं जानते थे। उसने उतने सारे दीप कहीं एक जगह न देखे थे। इस देश में वह उत्सव जो अनादि काल से आता आया है, अब फिर आया है। खुशी से त्यौहार मनाइये। हम सब आकर देखेंगे। आयेंगे।

गोहा का अतिथि

गोहा बड़ा भोजन प्रिय था। एक दिन किसी परिचित ने उसे एक मुर्गी दी। गोहा ने उस मुर्गी को पकवाया और बड़ी कृतज्ञतापूर्वक परिचित को खाने पर बुलाया। भोजन करके अतिथि चला गया।

इतने में अतिथि के पड़ोसी ने आकर किवाड़ खटखटाया, गोहा ने उसको भी खाना खिलाकर भेजा। इस बीच एक और ने हड़बड़ाते हुए आकर कहा—

मैं आपके उस दोस्त का दोस्त
, जिसने आपको मुर्गी दी
।" कहता वह कमरे में
ाया। "ओह, ऐसी बात है।
यह उस पानी की बहिन है,
समें मुर्गी को उबाला गया
।" गोहा ने कहा।

दिवाली आ गई

[कवि : मदन स्वरूप मनोज]

खुशियों का त्योहार दिवाली आ गई।
आओ खुशी से नाचें गाएँ
जग मग जग मग दीप जलाएँ
घर आँगन में करें उजाला
सभी अँधेरा दूर भगाएँ

दीपों का दरबार दिवाली आ गई।
खुशियों का त्योहार दिवाली आ गई।
बब्बु-डब्बु हैं दो भाई
मम्मी देती उन्हें बधाई।
करने को लक्ष्मी का पूजन
रजनी दीप जलाती आई।

हैं सजे सभी बाजार दिवाली आ गई।
खुशियों का त्योहार दिवाली आ गई।
खील बताशे और मिठाई।
बहुत नहीं खा लेना भाई।
कहीं तुम्हारा पेट न फूले
कहीं न खानी पड़े दवाई।

हो न जाओ बीमार दिवाली आ गई।
खुशियों का त्योहार दिवाली आ गई।

टोन्क तोड़ा का राजा राय सुर्तान अत्युन्नत राजपूत क्षत्रिय वंश का था। परन्तु सिल्ला नामक व्यक्ति के नेतृत्व में पठानों ने उसे हराया और टोन्क तोड़ा को अपने वश में कर लिया। राय सुर्तान भाग गया। मेवाड़ और बेदोर में शरण ली। परन्तु वह अपने राज्य को पुनः पाने की कोशिश करता रहा।

राय सुर्तान की एक ही सन्तान थी और वह भी लड़की थी। उसका नाम ताराबाई था। वह छुटपन में ही पिता की गोदी में बैठकर उसकी सुनाई हुई वीरों की कहानियां बड़े चाव से सुनती। जब वह महावीरों के पराक्रम के बारे में सुनती तो उसे रोमान्च होता।

"अगर मैं लड़के के रूप में जन्मती तो क्या अच्छा होता! टोन्क तोड़ा तुम्हारे लिए जीतकर देती।" ताराबाई पिता से कहा करती।

पिता भी अन्यमनस्क हो, लम्बा निश्वास छोड़कर कहता—"हाँ, बेटी।" उसे भी यह अफसोस बना रहता कि उसके कोई ऐसा लड़का न था, जो महावीर बन सकता। पर उसको इसका ख्याल न था कि उसकी नन्ही-सी सुन्दर लड़की शौर्य और पराक्रम बटोर रही थी। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गई, तैसे तैसे उसका क्रोध यह जान बढ़ता गया कि उसका पिता राज्य भ्रष्ट था। टोन्क के चले जाने पर जितना दुःख पिता को हुआ था उतना उसे भी होने लगा।

ताराबाई का धीरज छुटपन में ही असाधारण था। अगर कोई बात उसकी इच्छा के प्रतिकूल होती, तो वह सह न

भूपाल सिंह

पाती। उसे हमेशा यह बात बींधती रहती कि वह लड़की थी और अस्त्र-शस्त्र लेकर मर्दों के साथ, पिता के साथ, युद्ध में न जा पाती थी।

पर इतने में उसको एक बात याद हो आई। किसी ज़माने में राजपूत स्त्रियाँ युद्ध में आगे बढ़कर लड़ा करती थीं—क्यों न वह युद्ध विद्या सीख कर पिता के साथ युद्ध करे!

ताराबाई ने अपने आभूषण, सुन्दर वस्त्र निकाल दिये और युवकों के से वस्त्र पहिन लिये। अन्तःपुर की स्त्रियों ने आश्चर्य किया। उसने अपने पिता के पास जाकर कहा—"पिताजी, आज से मुझे आप अपना लड़का समझना।" पिता, स्तब्ध रह गया। वह उसकी बात को ठुकरा भी न पाया। वह जानता था कि यह परम्परा के विरुद्ध था। वह अपने प्रयत्नों में यदि असफल रही, तो उसका परिहास होगा।

ताराबाई ने अन्तःपुर की स्त्रियों को दूर रखा—"क्या स्त्रियाँ इस तरह रहती हैं? अगर यह ऐसी ही रही तो इस लड़की से कौन विवाह करेगा?" स्त्रियाँ कहतीं, तो वह मन ही मन हँसती।

अस्त्र विद्या वह बड़ी आसानी से सीख गई। जल्दी ही तीरन्दाज़ी, भाले आदि फेंकना भी सीख लिया। घुड़सवारी भी सीख ली। उसने इतनी घुड़सवारी सीखली कि जंगली घोड़ों को भी आसानी से अपने वश में कर लेती थी। चौदह वर्ष की उम्र थी और लोग उसके सौन्दर्य, पराक्रम, धीरज आदि की प्रशंसा किये करते।

इस बीच राय सुर्तान ने अपने राज्य को वापिस लेने के लिए कई बार प्रयत्न किया। परन्तु वह एक प्रयत्न में भी सफल न हुआ। वह पठानों को जीत न सका।

अब वह एक और प्रयत्न करने की तैयारी में था।

"पिताजी, इस बार मुझे भी आप साथ ले जाइये। मैं हर तरह की मुसीबतें झेल सकती हूँ। मुझमें युद्ध करने का साहस है।" ताराबाई ने पिता से कहा।

"अच्छा, आओ बेटी, ऐसा ही सही। अगर हार हुई और अपकीर्ति मिली, तो तुम भी उसमें हिस्सा बंटाओगी।" पिता ने कहा।

ताराबाई अच्छी नस्ल की काठियावाड़ी घोड़ी पर सवार होकर, पिता के साथ युद्ध करने निकली। जैसा कि डर था, पिता पुत्री युद्ध में परास्त कर दिये गये और शेष सेना के साथ बेदोर वापिस चले आये। ताराबाई के लिए यह पहिली पराजय थी। परन्तु उसके पिता ने इसको अन्तिम पराजय समझी और निराश हो गया।

इस बीच ताराबाई के सौन्दर्य और साहस के बारे में सब राजमहलों में बातें चलीं। कई ने उससे विवाह करने के लिए अपने दूतों द्वारा उपहार भेजे। सबसे उसने एक ही बात कही—"जो कोई मेरे

पिता के राज्य को जीतकर देगा उसीसे विवाह करूँगी।"

ताराबाई से विवाह करने के लिए कोई भी पठानों का विरोध मोल लेना नहीं चाहता था।

मेवाड़ के राणा के तीन लड़के थे। बड़े का नाम संगराणा, दूसरे का पृथ्वीराय, तीसरे का जयमल्ल। मेवाड़ का राजा बनने के लिए वे तीनों आपस में लड़ रहे थे। इसके बाद पृथ्वीराय अपना देश छोड़कर चला गया और गौद्वार नामक एक छोटे राज्य का राजा बन गया। जयमल्ल कुछ दिन इधर उधर फिरता रहा। फिर यकायक बेदोर में प्रत्यक्ष हुआ। उसने ताराबाई से विवाह करने के लिए कहा।

जो औरों से कहा था, वही ताराबाई ने जयमल्ल से भी कहा—"जो कोई मेरे पिता के राज्य को जीतकर देगा, मैं उसी के साथ विवाह करूँगी।" जयमल्ल इसके लिए तुरत मान गया। परन्तु जयमल्ल, पठानों से लड़ना बिल्कुल न चाहता था। जयमल्ल के मन में कुछ और था। अगर जैसे-तैसे ताराबाई से विवाह कर लिया गया, तो राय सुर्तान की सेना उसके

आधीन हो जायेगी, उस सेना को लेकर, संगराणा को हराकर, वह राजा हो सकेगा— वह सोच रहा था।

यह ताड़ कर कि जयमल धोखा देने जा रहा था, ताराबाई ने अपने पिता को आगाह किया। जयमल का युद्ध के लिए प्रयत्न करना तो अलग, वह अतिथि बनकर भीगी बिल्ली बनकर, राजमहल में घूम फिर रहा था, ताकि ताराबाई से वह एकान्त में मिल सके। उसे एक बार ऐसा लगा जैसे वह एकान्त में हो। जयमल ने उसको जबर्दस्ती पकड़ना चाहा। ताराबाई चिल्लाई, पास ही उसका पिता था, उसने एक ही चोट से जयमल को मार दिया।

यह बात पृथ्वीराज को पता लगी। उसे ऐसा लगा, यदि ताराबाई-सी पत्नी उसको मिले तो वह कितना ही राज्य जीत सकता था। उसके पिता को राज्य दिलवाकर उससे विवाह करने के उद्देश्य से पृथ्वीराज बेदोर आया।

पृथ्वीराज और ताराबाई एक दूसरे को देखते ही आपस में प्रेम करने लगे। पृथ्वीराज भी ताराबाई की तरह सुन्दर और पराक्रमशाली था।

"मैं तुम्हारे पिता का राज्य वापिस दिलवा दूँगा। अगर न दिला सका, तो मैं राजपूत नहीं हूँ।" पृथ्वीराज ने यों शपथ की, ताराबाई यह जान बहुत प्रसन्न हुई।

पृथ्वीराज तुरत युद्ध के लिए प्रयत्न करने लगा। उसने अपने घुड़सवारों में से पाँच सौ योद्धाओं को चुना और उनको साथ लेकर युद्ध के लिए निकल पड़ा। ताराबाई ने भी उसके साथ जाने की ज़िद पकड़ी। उसके कष्ट सुखों में हिस्सा बँटाने की इच्छा उसमें तब ही पैदा हो गई थी।

पृथ्वीराज जिस समय युद्ध के लिए निकला था, वह विजय के बहुत अनुकूल था, क्योंकि मुसलमानों के वे पर्वदिन थे। उन दिनों में फरिश्ता के पोते बलिदान हो गये थे यानि मोहर्रम के दिन थे। इन दिनों मुसलमान दुःख मनाते हैं। नगरवासी यह न जान सके कि पृथ्वीराज और ताराबाई, सेनायें लेकर टोन्क तोड़ा के पास आ गये थे। वे मातम मना रहे थे।

अपनी सेना को पृथ्वीराज ने शहर के बाहर ही रखा। ताराबाई और एक और विश्वस्त सैनिक को लेकर उसने नगर में प्रवेश किया। उन पर किसी को भी सन्देह नहीं हुआ, किसी ने उनको रोका भी नहीं। किसी को इसका पता तक न था। पठानों का नेता महल पर से चिल्लाया "ये तीनों कौन हैं! कहाँ के हैं!"

तुरत पृथ्वीराज का फेंका भाला और ताराबाई का छोड़ा बाण, पठान नेता को लगे। वह गिर गया। मुसलमान जान गये कि कोई खतरा था। उन्होंने तीनों को पकड़ना चाहा। परन्तु नगर के हिन्दुओं ने पकड़नेवालों को रोका, टोका। उस भीड़ में उन तीनों को नगर से बाहर भिजवा दिया।
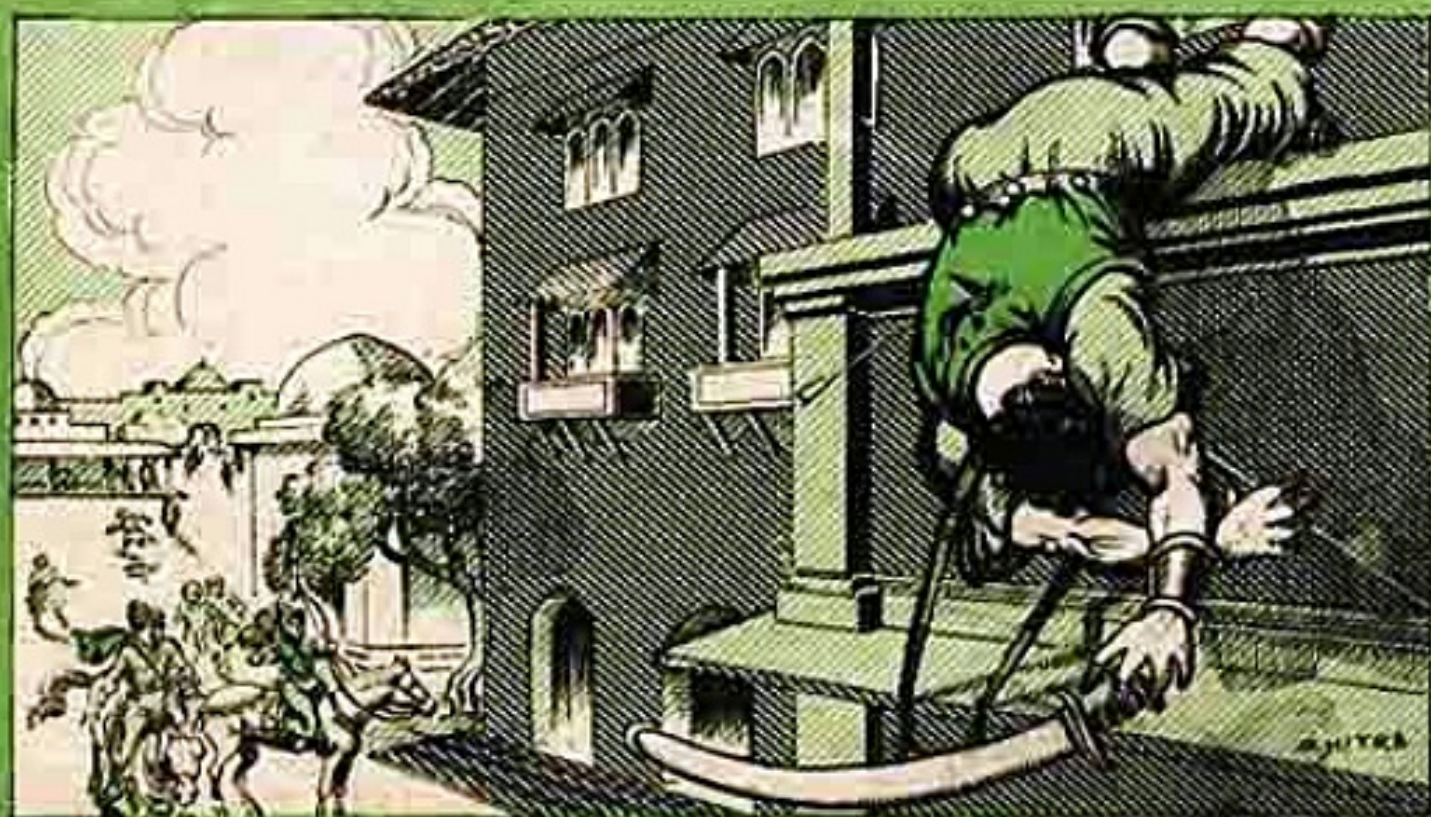
जब वे नगर के द्वार के पास पहुँचे, तो उनके रास्ते में एक हाथी खड़ा था। पीछे से पकड़नेवाले उनको खदेड़ रहे थे। ताराबाई न डरी। उसने अपनी तल्वार निकाली और हाथी की सूँड़ काट दी, भय और दर्द से हाथी चिंघाड़ता, लोगों को रोंदता भाग निकला।

यही मौका देख तीनों नगर का द्वार पार करके बाहर चले आये। अब भी उनके पीछे कुछ लोग चले आ रहे थे। पाँच सौ घुड़सवारों ने यकायक इन लोगों का सामना किया। इनमें कई तो मारे गये और कई तितर बितर होकर भाग गये।

पृथ्वीराज के सैनिक एक साथ नगर में घुसे। गली सड़कों में भयंकर युद्ध हुआ। देखते देखते उन्होंने सारे नगर को अपने वश में कर लिया, नगर जब पृथ्वीराज के आधीन हो गया, तो मुसल्मान शासक वहाँ से खिसक गये, और ऐसे प्रान्तों में चले गये जहाँ मुसल्मानों का राज्य था।

राय सुर्तान बड़े वैभव के साथ फिर अपनी राजधानी में आया। पृथ्वीराज ने स्वयं उनको ले जाकर गद्दी पर बिठाया। इसके कुछ दिनों बाद पृथ्वीराज और ताराबाई का विवाह सम्पन्न हुआ।

टोन्क तोड़ा से पठानों के चले जाने के कारण अजमेर के सुल्तान को गुस्सा आ गया। पृथ्वीराज को यह बात पहिले ही मालूम हो गई। उसने ताराबाई को लेकर उस पर हमला किया और अजमेर को भी अपने आधीन कर लिया।

अब भी अजमेर के पास एक पहाड़ी पर एक किला है, जिसका नाम तारागढ़ है।

भोजन के बाद बाबा आँगन में आराम कुर्सी में बैठा। चान्दनी छिटक रही थी। बाबा ने सुंघनी नाक में डालकर हाथ झाड़ते हुए यह श्लोक सुनाया :

"परोक्ष सा आकर्ण्य
न युक्तं प्रतिभाषितुम्
बहिर्निष्कासितः कोपि
बधिरः प्रतिकूलवाक्।"

बाबा के चारों ओर बैठे बच्चों ने पूछा—"बाबा, इस श्लोक का अर्थ क्या है?"

"श्लोक का अर्थ! सुनो। बताता हूँ। इसका अर्थ यह है कि जब तक किसी का कहा पूरा सुन न लो, तब तक जवाब न दो। क्योंकि एक बहरे ने कुछ ऊल जलूल बातें की थीं इसलिए उसे मार कर भगा दिया गया।" बाबा ने धीमे धीमे कहा।

"वह बहरा कौन था बाबा, उसने क्या कहा था? उसको क्यों मारकर भगा दिया था? यह क्यों नहीं बताते?" बच्चों ने प्रश्नों की वर्षा की।

कभी काँचीपुर में देवशर्मा और हरिशर्मा नाम के दो दोस्त रहा करते थे। बचपन में तो वे दोस्त थे ही, बड़े होने पर भी उन दोनों में दोस्ती बनी रही।

देवशर्मा को कुछ बहरापन होने लगा। उसे हमेशा इसका भय बना रहता, कहीं यह सबको मालूम न हो जाये।

एक बार हरिशर्मा बीमार पड़ा। बहुत इलाज किया गया। हर तरह की कोशिश की गई। पर वह बीमारी न गई। हरिशर्मा

निराश हो गया कि कभी उसकी बीमारी ठीक ही न होगी।

देवशर्मा को पता लगा कि उसका मित्र हरिशर्मा बीमार था। वह उससे मिलने गया।

पर वह तो बहरा था न! ज्यादह देर तक बातें करते रह जाना ठीक न था। दूसरों की बात तो उसे सुनाई देती न। और सब यह जान जायेंगे कि वह बहरा था। इसलिए उसने मित्र से तीन प्रश्न करके वापिस आने की ठानी।

यह जानते ही कि उसको देखने देवशर्मा आया था, हरिशर्मा ने खुश होकर उसे बैठने के लिए कहा।

"बीमारी कैसी है?" देवशर्मा ने पूछा।

"यह तो ठीक होती नहीं लगती।" हरिशर्मा ने कहा।

यह बात देवशर्मा को तो सुनाई दी नहीं। उसने कहा—"भगवान की कृपा से ऐसा होना चाहिए। औषधी क्या है?" देवशर्मा ने फिर पूछा।

"मृत्यु ही अब एक औषधी है।" हरिशर्मा ने कहा।

"वह तो अच्छी औषधी है। मगर वैद्य कौन है?" देवशर्मा ने पूछा।

"कौन? यमराज और कौन?" हरिशर्मा ने खौलते हुए कहा।

"उसी पर भरोसा करो, वह अच्छा है।" देवशर्मा ने कहा।

यह सब हरिशर्मा के बन्धु सुन रहे थे। वे आगबबूला हो उठे। उसे खूब मार पीटकर गली में धकेल दिया।

"देखा, दूसरे की बात बिना सुने जवाब देना कितना खतरनाक है!" बाबा ने कहा।

हमारे देश के आश्चर्य:

नालन्दा विश्वविद्यालय

भारतीय इतिहास में गुप्त राजाओं के राज्य काल को प्रायः स्वर्ण युग कहा जाता है। इस युग में शिल्प और कला की खूब उन्नति हुई। कालिदास और दण्डी आदि महाकवि गुप्त राजाओं के राज कवि थे। इन्हीं के समय में अजन्ता की कुछ गुफायें भी बनाई गईं। इन्होंने कई शास्त्र भी लिखवाये।

४१३ ईसवी में विक्रमादित्य का लड़का, प्रथम कुमार गुप्त सम्राट बना। इसने ही नालन्दा के पास एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। इस विश्वविद्यालय में बौद्ध-ग्रन्थों का तो पठन होता ही, वैदिक ग्रन्थों का भी अध्ययन किया जाता।

यह विश्वविद्यालय सात सौ वर्षों तक सफलता-पूर्वक चलता रहा। इसमें हमारे देश के विद्यार्थी तो अध्ययन के लिए जाते ही, दक्षिण एशिया और चीन आदि देशों से भी आते। सातवीं शताब्दी में यात्री ह्वानत्सान्ग ने यहाँ न केवल अध्ययन ही किया, अपितु इसके बारे में कई महत्वपूर्ण बातें भी लिखीं।

नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेष पटना नगर के पूर्व में ६० मील ही दूरी पर हैं।
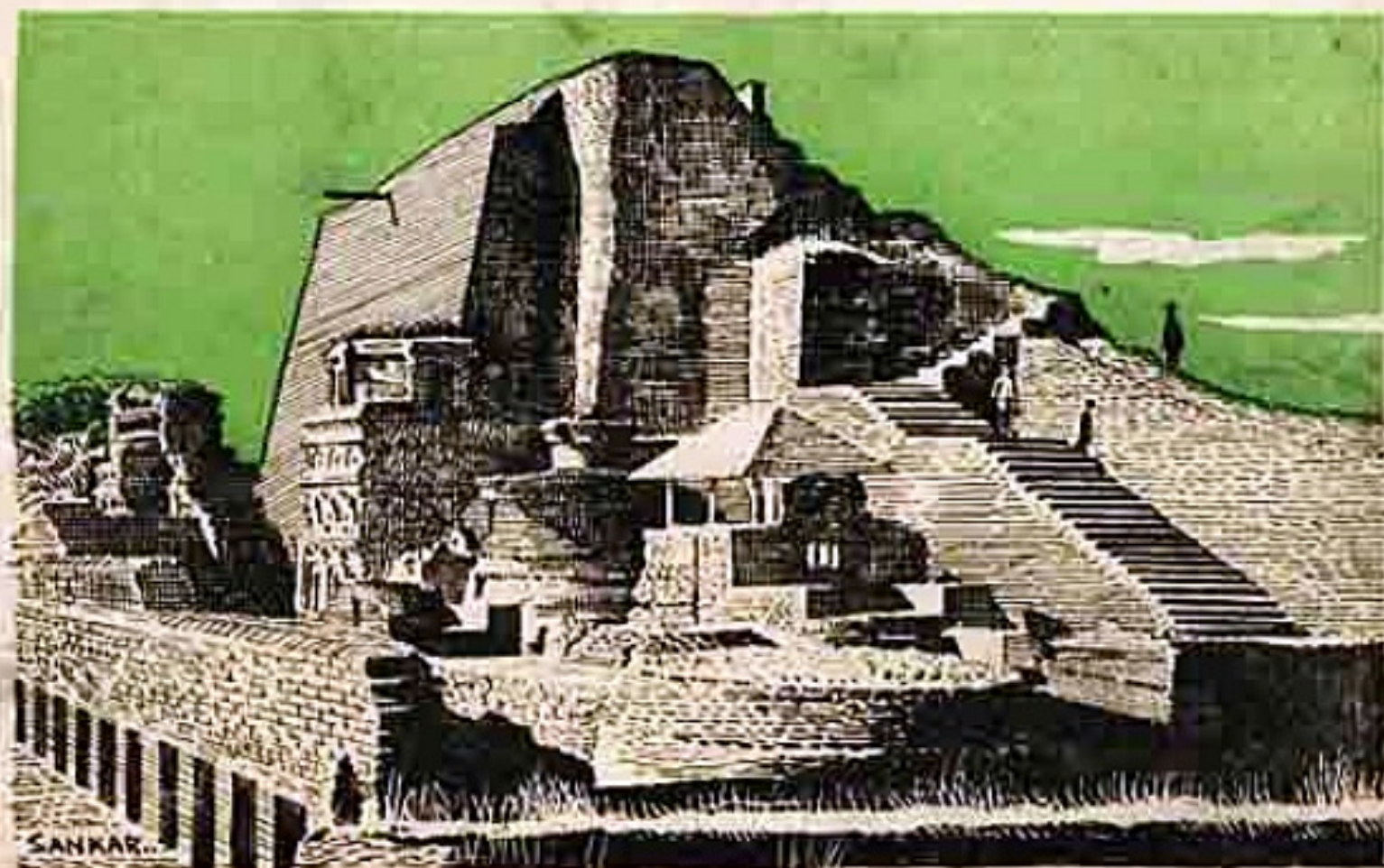
प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रदेश :

मट्टन नगर

लेखक : कन्हैया लाल चचा, मोती नगर (नई दिल्ली)

यद्यपि काश्मीर का प्रत्येक नगर इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, तथापि 'मट्टन' या मार्तण्ड नगर इन सब में श्रेष्ठ है। यह छोटा-सा नगर काश्मीर की राजधानी श्रीनगर से ३८ मील के लगभग दूर है। यहाँ एक सुन्दर कुण्ड है। इस कुण्ड के किनारे पर एक उत्तम मन्दिर है। काश्मीर हिन्दु इसे गंगा या गया जैसा पवित्र मानते हैं। प्रत्येक हिन्दु यहाँ आकर अपने पितरों का श्राद्ध करता है। यहाँ पर एक ऊँचे 'करेवे' या 'वुडर' (हरी भरी ऊँची भूमि) पर २००० वर्ष पूर्व भारत का एक विख्यात विश्वविद्यालय 'मार्तण्ड' स्थित था। मार्तण्ड विश्वविद्यालय में दूर दूर से विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे। आज इस विश्वविद्यालय के खंडहर ही विद्यमान हैं। परन्तु ये भी वस्तुतः बड़े प्रभावशाली हैं। उसको संभवतः काश्मीर के सम्राट ललितादित्य ने बनवाया था।

यह मन्दिर २०० फुट लंबा व १४२ फुट चौड़ा है। यह सारे का सारा भीमकाय पत्थरों का बना हुआ है। ये पत्थर काश्मीर भाषा में "दिविर कुत्य" कहलाते हैं, व इन पर ऐसी पोलिश-सी है कि उसमें दर्पण की तरह मुँह दिखता है। इस मन्दिर के खंडहरों में ८४ खम्भे, जो जालीदार हैं, धराशायी अवस्था में भी अति सुन्दर हैं। मन्दिर ३ परकोटों, गर्भगृह, तथा अंतरालयों में विभक्त रहा है, जिसके दोनों ओर दो देवालय हैं। अंतरालय के पत्थरों पर देवी-देवताओं की मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। यह मन्दिर इस भग्नावस्था में भी प्रभावोत्पादक है, व उसके पुराने गौरव की गाथा दोहराता है।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९६१ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, नवम्बर '६० के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता,
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६.

नवम्बर – प्रतियोगिता – फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : सब कुछ है खाली यहाँ !
दूसरा फ़ोटो : जायें तो, जायें कहाँ !!

प्रेषक : चन्द्रमोहन नेवर,
१२, अनुकुल मुखर्जी रोड, कलकत्ता-६

१. जुगल किशोर परमार, नीम चौक, मन्दसौर

क्या आप "चन्दामामा" में एक ऐसा पृष्ट देंगे, जिसमें श्री शंकर और चित्रा जैसे चित्रकार चित्रकला के बारे में कहें—सिखायें ?

सुझाव अच्छा है। श्री चित्रा और श्री शंकर पहिले ही बहुत व्यस्त हैं। अवकाश मिलने पर आपके सुझाव पर अवश्य विचार करेंगे।

२. एम. रसफ, पी. बोक्स नं. ३०, खाण्डवा

क्या आप "चन्दामामा" के अलावा और कोई अखबार भी छापते हैं ?

फिलहाल केवल "चन्दामामा" का ही प्रकाशन हो रहा है।

३. कुन्ती देवी, नरसिंहवान नेपाड़ा पर्नपुर, पर्दवान

क्या यह सच है कि जैसा कि आपने "गलीवर की यात्रायें" में लिखा है कि गलीवर ने जहाज़ के कप्तान को विश्वास दिलाने के लिए जेब से गाय, बैल बकरियाँ निकालकर रखा और उसी वक्त एक चूहा आकर एक बकरी को उठा ले गया, और निगल गया, क्या ऐसा हो सकता है ?

कहानी है, और कहानी में क्या नहीं हो सकता ?

४. श्यामलाल ग्यानीलाल अग्रवाल, ६२ च मेखड़ा, पूना ६

आप चन्दामामा के वार्षिक चन्दे में कुछ कमी क्यों नहीं करते ?

यह तो सम्भव न होगा, क्योंकि इस चन्दे पर भी मुश्किल से ही "चन्दामामा" के प्रकाशन का खर्च निकल आता है।

५. बलवन्तसिंह नेगी, ईसू पटेल नगर, ३३/२० न्यू देहली

क्या जो प्रश्न हम पूछते हैं, वे सभी भाषाओं में छपते हैं ?

नहीं, यह स्तम्भ हर भाषा का अपना अपना है।

६. रायगति, पासवान

"क्या वार्षिक "चन्दामामा" के लिए केवल रकम ही भेजी जानी चाहिये या उसके लिए और भी कोई नियम है?

और कोई नियम नहीं। चन्दा भेज देना पर्याप्त है।

७. एस. सुरजीतसिंह, गर्दी कोट, देहरादून

"चन्दामामा" में जो बेताल की कथायें छपती हैं उनका कभी अन्त होगा कि नहीं?

हर चीज़ का अन्त होता है। इनका भी होगा। पर इस बीच कई पाठकों ने लिखा है कि वे बिना बेताल की कहानियों के "चन्दामामा" की कल्पना भी नहीं कर सकते।

८. लालचन्द टी. डी. भारत साईकल स्टोर, जूना मार्केट, गोंदिया

अगर मैं आपके "चन्दामामा" का पाँच वर्ष का ग्राहक बनूँ तो आप क्या रियायत करेंगे?

रियायत का क्रम, हमें खेद है, हमारे यहाँ नहीं है।

अगर मैं आपको फिल्मी गीतों पर आधारित कहानी भेजूँ तो क्या आप प्रकाशित करेंगे?

जी नहीं। अफसोस है।

९. सतीश चन्द्र जैन, रानी बाजार, सहारनपुर

प्रश्नोत्तर का क्या पता है? हमें कैसे इसे भेजें।

वही पता है जो चन्दामामा का है—यानि २-३ आर्काट रोड, वडपलनी मद्रास-२६ मगर आपको पते के ऊपर लिखना होगा—"प्रश्नोत्तर!" और ख्याल रहे कि लिखावट साफ़ हो।

१०. कृष्णलाल प्रध, जीन्दशहर, जिला संगरुर, आर्यसमाज के निकट

आपने मुख-चित्र का हाल लिखना बन्द कर दिया है क्या कारण हैं?

बन्द नहीं किया है, बल्कि और विस्तृत रुप से दिया जा रहा है।

११. रायनारायण सिंह, कदम कुआँ, पटना

क्या प्रश्नोत्तर में प्रकाशित प्रश्नों के लिए पारिश्रमिक मिलता है?

जी नहीं।

सूचना:—प्रश्नों का तभी उत्तर दिया जा सकेगा, यदि प्रश्नकर्ता, प्रश्न के साथ अपना पता भी भेजेंगे।

चित्र-कथा

एक रोज दास और वास पतंग उड़ाने के लिए शहर से बाहर खेतों में गये। दास के हाथ में लाल पतंग देखते ही खेत में चरता बैल उनके पीछे दौड़ा। दास और वास भागने लगे। "टाइगर" दास के हाथ के पतंग का धागा मुख में रखकर एक ओर भागा। बैल उसके पीछे दौड़ा "टाइगर" कुछ दूर भागा। फिर उसने पतंग को नहर के किनारे एक पेड़ के तने से बाँध दिया। भागता भागता बैल आया और पेड़ से टकराया। पेड़ टूट गया और बैल नहर में जा गिरा।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

अब

अपना
मनचाहा स्वास्थ्यवर्धक
वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड
विटामिन युक्त
लीजिए

अब आप भारत का मनचाहा और स्वास्थ्यप्रद टॉनिक विटामिनयुक्त खरीद सकते हैं। वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड के प्रसिद्ध फार्मूले में स्फूर्तिदायक बहुमूल्य विटामिनों का समावेश किया गया है। यह बीमारी के बाद की कमजोरी को दूर कर शरीर में नयी ताकत और स्फूर्ति पैदा करता है। खून साफ करना, स्नायुओं और मांसतन्तुओं में नया जीवन लाना और शरीर में बीमारी को रोकने की अद्भुत शक्ति पैदा करना यह सब वाटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड के विशेष गुण हैं।

वाटरबरीज़
विटामिन
कम्पाउन्ड

आपकी खुराक का पूरक।

लाल लेबलवाला क्रियोसोट तथा ग्वायकोलयुक्त वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड हर जगह मिलता है जो सर्दी और खाँसी के लिए बेजोड़ है।

लोमा
REGD.

शहरी बहू—गांव में
पिछले साल जब मैंने निर्मला से शहर में ही चुपके से शादी कर ली तो हमारे घर मे एक हंगामा बरपा हो गया। लेकिन फिर आहिस्ता आहिस्ता सारा मामला ठंडा हो गया। आखिर शादी से एक साल बाद मैं निर्मला के साथ गांव गया।
हौले हौले मां निर्मला के सुन्दर मुख और मीठे स्वभाव को देख कर सब कुछ भूल गई। और यह जो एक डर था कि पढ़ी लिखी लड़कियां घर का काम नही करती, यह भी जाता रहा। निर्मला घर के सारे कामकाज में उसका हाथ बटाने लगी।
सब से बड़ी खुशी मां को यह देख कर हुई कि हौले हौले गाँव की औरतें रोज निर्मला से मिलने आतीं। निर्मला उन्हें दुनिया भर की नई नई बातें बताती।
S/P. 5A–50 HI

मां को सचमुच अपनी पढ़ी लिखी बहू पर बहुत गर्व था।

अभी कल लच्छमी मेरी मां से कह रही थी, "बहन हम तो समझती थी कि पढ़ी लिखी लड़कियां काम की नहीं रहती। पर तुम्हारी बहूरानी की तो बात अलग है।"

"काम की क्या कहती हो। अब देखो ना सुबह से कितना काम किया है—खाना बनाया, भाड़ू लगाया, सफाई की, चीजें करीने से रखीं, सिया पिरोया, दो पत्र लिखे और अभी अभी नहाने से पहले यह ढेर सारे कपड़े धोये हैं......" मां ने बाहर आंगन में रस्सी पर सूख रहे कपड़ों की ओर इशारा करते हुये कहा।

लच्छमी ने उधर देखा "हाय राम, तो क्या इतने सारे कपड़े बहु ने ही धोये हैं! यह चद्दरें भी? और फिर कैसे सफेद और उजले धुले हैं! हमारे धोने से तो मुई मैल ही नहीं जाती। आखिर पढ़ी लिखी लड़की है ना।"

निर्मला ने बाहर आते हुये लच्छमी की बात सुन ली थी कहने लगी "चची इस में पढ़े लिखे होने की क्या बात है। सही किस्म के साबुन से कपड़े धोये जायें तो साफ और उजले धुलेंगे ही।"

"ऐसा कौनसा साबुन है? बेटी हम भी तो सुनें।" लच्छमी ने पूछा।

"सनलाइट साबुन। क्या तुम्हें नहीं पता?"

"क्या यह ऐसा ही बढ़िया साबुन है?"

"हां, सनलाइट से कपड़े खूब सफेद और उजले धुलते हैं क्योंकि सनलाइट जरा सा मलने पर इतना झाग देता है कि इस से कपड़ों के ताने बाने में की मैल बाहर आ जाती है।"

पास बैठी दूसरी औरतों को जैसे किसी नई चीज का पता लग गया हो तभी मेरी मां ने कहा, "और मजा तो यह कि इस साबुन से कपड़ों को पीटना पटकना नहीं पड़ता। बस जरा सा मलो, कपड़े बिल्कुल साफ। मेहनत तो बचती ही है, कपड़े भी फटने से बचते हैं।"

"पर यह तो महँगा साबुन है" बीच में से एक औरत ने मेरी मां से कहा।

मेरी मां से कोई जवाब नहीं बन पाया।

निर्मला मुस्कराई, "देखा जाये तो यह महँगा नहीं है। असल में यह इतना झाग देता है कि इस से ढेरों कपड़े धुल जाते हैं। अब देखो न यह छोटे बड़े बीस से ज्यादा कपड़े आधी टिकिया से ही धुल गये हैं। इस हिसाब से क्या इसे महँगा कहा जा सकता है?"

"बेटी तुम तो गुणों की पुतली हो। तुम से तो रोज नई नई बातें सीखने को मिलती हैं," लच्छमी ने खुशी से कहा।

S/P. 50-50 HI.

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

आधुनिक यन्त्र
और कुशल
कार्य-कर्ताओं से
सुसज्जित,
सुव्यवस्थित
बृहत संस्था
PRASAD
PROCESS
आफ़सेट प्रिन्टर्स

उफ़! कितनी थक जाती थी मैं...

मेरे घरवाले मेरे भविष्य के लिये चिंतित थे...

घर का थोड़ा सा काम भी बोझ सा लगता था, मैं अपने चारों ओर की चीजों से दिलचस्पी और खुशी को खोने ही वाली थी कि मेरे एक मित्र ने मुझे सिंकारा का उपयोग करने को कहा। मैंने वैसा ही किया। अब मुझ में इतनी स्फुर्ति आ गई है के मेरे पतिदेव समझते है कि मुझे नयी जिन्दगी मिली है।

थोड़े से पानी में तीन चम्मच सिंकारा लीजिए। इसका स्वाद अच्छा है। यह स्फुर्ति की रक्षा भी करता है। खास तौर गर्भाशय और जुकाम के समय ज्यादा फायदेमन्द है। रोजाना अपने भोजन के साथ सिंकारा लीजिए और सेहत और ताजगी से नयी सुबह का आवागमन कीजिये।

"स्वास्थ के संकेत"

यह पुस्तिका मुफ्त हासिल करने के लिये, इस इश्तहार को काट कर हमें भेज दीजिये, हमदर्द-देहली, अपना नाम और पता साफ़ साफ़ लिखें।